مجالس الاشعار

सलासलअशआर

حصه سیوم

याने

मजमउल अशआर

भाग त्रीजो ३

सरवे शोकीन वांचनाराओने सारु उरदू उपरथी सारीरीते सुधारीने तेना त्रण भाग करीने गुजराती हरफे छपावीने शेठ करीमजी मूसाजीए पोताना हैदरी छापखानामां छापी

प्रसिद्ध कर्यो.

मुकाम मुंबई.

सन १२९९ हिजरी.

संवत १९३८ ना विक्रमार्कीत.

सने १८८२ ईसवी.



रदीफ़ या·

ग़ज़ले ईदीह·२९३

क्या ख़ते मुबारकमें सफ़ाई नज़र आई;
नक़शेमें मोहम्मदके ख़ुदाई नज़र आई·
अतराफ़ो जवानिबमें सुरैयासे सरातक;
उस जरज़े कुजराकी ज़आई नज़र आई·
जब हाल निकल वस्ल हुवा, तब तो खुली आंख;
उस चश्मके परदेमें, ख़ुदाई नज़र आई·
आलमको दिया हज़रते, आलमने पुकारे;
उस नूरे इलाहीकी, दोहाई नज़र आई·
कूचेमें सितमगरके, जो लाशें पड़े हैं;
उस दहरकी मासूम चढ़ाई नज़र आई·
उस सरवे रवां ख़ासपे नित अबरे रवां देख;
उम्मीद हो आलमकी, जब आई नज़र आई·

એ ઝ઼ને ફ઼ીહ઼ જાકે કદમકોહ઼ લએબંદર ;
વોહ઼ ઝ઼ત અબજ ફેરે ફુમાઈ નઝ઼ર આઈ·

ગ઼ઝ઼લે ફ઼ીહ઼· ૨૯૪

જબ ઉસબુતે કાફ઼િરકી, સવારી નઝ઼ર આઈ ;
આશિક઼કી વહીં અક઼લ, સિંધારી નઝ઼ર આઈ·
રોનેસે મેરા સબ્ઝ઼ હુવા, જાગે ઘ઼ેલાયત ;
ચશ્મોંકી ઘટા અબ્રે, બહારી નઝ઼ર આઈ·
આનેસે સ઼નમ મઝ઼્લિસે, રિંદામેં હુવા કૈફ઼ ;
આંખોમેં તેરે મયકી, ખ઼ુમારી નઝ઼ર આઈ·
દુન્યાસે ગયા ગોરમેં, તોભી ન પડા ચૈન ;
કુછ તેરે ઝ઼મીભી, ન ક઼રારી નઝ઼ર આઈ·
હર સફ઼હએ ગુલઝ઼ારપે, નઝ઼રેસે સ઼નમકે ;
ખિલ્વાહકે ઝ઼ખ઼મ નક઼્શોને, ગારી નઝ઼ર આઈ·
આશિકકો બિઠા ક઼ત્લકિયા, એક નિગાહસે ;
ક્યા ખ઼ૂબ઼ તેરી ઝ઼ુલ્ફ઼, ગુઝ઼રી નઝ઼ર આઈ·
કુબ પાર ફ઼કીહ઼ હોવે, તેરે ઝ઼ુલ્મસે ઝ઼ાલિમ ;
તુઝ હિઝ્રકી સીનેમેં કટારી નઝ઼ર આઈ·

ગ઼ઝ઼લે નિયાઝ઼ ૨૯૫

દિખ્લાએ દાગ઼ે દિલ઼ને, ગુલિસ્તાં નએ નએ ;
વહ઼શત દિખા રહીહય, બયાબાં નએ નએ·

ऐसे बुतांसे मुझको ख़ुदाही बचाइयो ;
पैदा हुए हैं अनेक, जहां नये नये·
दैरो हरम्म कोई नहीं, तेरी राहपर ;
फ़क़ीर नये नये हैं, मुसल्मां नये नये·
मैं इसतरह बनूं, तेरे हाथोंसे तंग हूं ;
आती कहांसे रोज़ गिरियां नये नये·
किसतरह हो गुज़र दे, अदांपे ऐ नियाज़ ;
दरबा नये नये हैं, निगहबां नये नये·

ग़ज़ले आ़शिक़· २८५

तेरी उल्फ़तमें हुए अनेक, जहां कितने
लिखनाये फूंके मेरे गज़रे मुसल्मां कितने·
एक उम्मीदथी तुझसे, न बर आई मेरी ;
रहगये दिलमें मेरे, हसरतो अरमां कितने·
नहीं मिलता तेरे नाके कापता ऐ लैली ;
छानमारे तेरे मजनूंने, बयाबां कितने·
कितनोंको इनके बालोंसे, भुकायातो यही ;
भुल्के पेचांके पड़े पेचमें, बेजां कितने·
जिस्ने देखा तेरी तस्वीर, कहा सूरते ख़ुदा ;
पड़ते सज्दात हैं आ आके, मुसल्मां कितने·
एकथा आयनापोश, जिस्के हैं हैरां कितने ;

फिरते हैं जुल्फ़ परेशांके, परेशां कितने
ऊठके सहरासे चला, शोहरकी जानिब जबमें;
लिपटे दामनसे मेरे, खारे मुगीलां कितने.
मुसहफ़ी दिलमें खिंची जाती है, उसकी तस्वीर;
जैसे कुरआंसे लिखे जाते हैं, कुरआं कितने.
कोई समझा न तेरे शेअरका रुत्बा आक़िल;
यूं तो हैं कहनेको दुन्यामें, सख़ुनदां कितने.

ग़ज़ल ये चली २८७

जिसे इश्क़का तीर, कारी लगे;
उसे ज़िंदगी जगमें, भारी लगे.
न होवे उसे जगमें, हरगिज़ क़रार;
जिसे यार जानीसे, यारी लगे.
न छोड़े महब्बत, दमे मरग तक;
जिसे इश्क़की, बेक़रारी लगे.
वली हरदम मुझे, आशिक़े पाकको;
प्यारे तेरी बात, प्यारी लगे.
अगर तू वलीके, सुख़नको सुने;
रक़ीबोंके दिलमें, कटारी लगे.

ग़ज़ल ये हुई २८८

सो है जिगरपे नक्शीहै, नामे मोहम्मदी;

रोज़े अज़लसे हमहैं, गुलामे मोहम्मदी·
हरगिज़ छुपे न कसरे, फ़लकसे बलंदहो ;
मौजूंहै चश्मे रहअले, बामे मोहम्मदी·
कुंहते तो कैसे मुरदेभी, उठतेथे गोरसे;
सुननेको गोरो दिलसे, कलामे मोहम्मदी·
चरखे चहारुम छनका, मकां उनका लामकां ;
ऐसासे है बलंद, मकामे मोहम्मदी·
है आरजूमे जंदमे, आशक़ चढ़ा यही;
या रब बनादे मुझको, गुलामे मोहम्मदी·

ग़ज़ल लतीफ़ · २५७

दाग़ हिजरांका न जयेगा, कभू दिलसे मेरे ;
यह निशानीतो मिलीहै, मुझे क़ातिलसे मेरे·
चश्मे उस शोख़ निगहका, न जांसे हो कभू;
हाल सैय्यादका पूछो, दिले बिस्मिलसे मेरे·
हाल क्या पूछतेहो, हिजरकी बीमारीका ;
बहर आसारतो है यारो, शमायलसे मेरे·
शाहको ताअवीज़पे उसके, बकिया दस्तदराज़
बोला चल दूरहो, क्याकाम हमायलसे मेरे·
चंद हरचंदके मैं दामने, लैली पकडूं ;
हथितो दूर हमेशा रहे, महमिलसे मेरे·

क़तल तो उसने किया मुझको, पतशाहीरनकी;
खलकी कोताही हुई साहबे, क़ातिलसे मेरे.
आग लगजाये न दुन्यामें, मुझे डर हय जलतीई;
आह सोज़ां बनिकलतेहैं, जहां दिलसे मेरे.

ग़ज़ल. ३००

ख़ंजर हमपे जा, तपानी हय;
मूझे सरतकली, सरगिरानी हय.
मेरे ज़ख्मोंपे मत रखो मरहम
मेरे क़ातिलकी यह निशानी हय.
तलवे छिदछिदके होगये ग़िरबाल;
हमने सहराकी ख़ाक छानी हय.
हाले दिल पूछलो तबीबोंसे;
क्यूं मेरा रंगे ज़अफ़रानी हय.
चाहिये ज़ख्मे दिल हरे होजायें;
पेहनी पोशाक उसने दहक़ानी हय.

ग़ज़ले शाहीद. ३०१

कहो उस बरक़ वशीसे, आज आलम साथि बनाहय;
बनानेपर हमारे अब्रे रहमत, शामियाना हय.
चलूंगा सरके बलशौक़, शहादत दस्तगीरीमें;
जहां तलवार चलती हय, उसी कूचेमें जानाहय.

लिया जिस्ने हमारा नाम, मारा बे गुनह उस्को ;
निशां जिस्ने बताया है, वोह तीरोंका निशाना हय.
बेशरम आओ तो प्यारे छोड दूं, मिज़गांके खिंचनको ;
तुम्हारे ऐन वाक़ेहपर, हमें आंखें बिछाना हय.
गिरेबां फाडके दस्ते जुनूंसे, कब कुछे फ़ुरसत ;
अभीतो दामने सहराके भी, पुरज़े उडाना हय.
जो बाल उस्के उलझते हैं तो, दिल मेरा उलझता हय;
यहां है दर्द शानेमें, यहां जुल्फ़ोंमें शाना हय
मिसाले नक़्शे पा लाखों, पडे रहते हैं सरये कब ;
मगर क़ातिल तेरा गंजे शहीदे आस्ताना हय.

ग़ज़ले बख़्शिश-३०२

तासीर तेरे इश्क़ने, मुझपर बरी न की ;
मैं क्या करूं नसीबने, कुछ यावरी न की.
दिलबर समझके दिल्को दिया, उस्के हाथमें ;
दिल ले गया मेरा, मेरी कुछ दिलबरी न की
है रश्के मुश्तरी तेरी ख़ूबीके सामने ;
ख़ुरशीदने भी बरीसी, कुछ हमसरी न की.
नज़दीक थाके पोंहचे सिकंदर लबे हयात ;
है ख़िज़्र यहां तलक, भला क्युं रहबरी न की.
बख़्शिशके पास गो हरे, दिल था विसालमें ;

क़ीमत कुछ उसकी तूने तो, ऐ बेहरी न की·

ग़ज़ले तमन्ना ३०४

ख़याल आता है यह सब गुन्ची, कि छाती में सिपर करके जीये;
पपीहे यह हय युले रंगे, गुलज़ार खार उसके परके जीये;
यही है तसकीन वक़्ते आख़िर पे, तेरे बीमारो नातवां के;
के संग तेरे है आस्तां का, जबीं के बालीन सर करके जीये·
चमक रहा था ज़मीं पे जिसके, असर के क़ाक़ तरा यो घिस्त रहसे;
सितारा जैसे हो जगमगाता, के उसके ऊपर क़मर करके जीये·
चमन में ताइर यह जपी, मस्ती से यह चहाते हैं दम गुल के;
बेपरे गुल कू को देख सैर तो, रखें मिन्क़ार पर करके जीये·
निगाहे पूरे जो असी आई तके लगे, जर के उसे हाथे नादिम;
जो के र के दुश्मन पे ध्यान गुजरे तो, आके ठहरे क़मर करके जीये·
चढ़ा यो: डोंठे पे जब डालिल तो, सब पुजारी यहां की फ़िक्र तं;
के तेरी देह शत से फ़ुरसती निकले, छिपा के मुहको सिपर करके जीये;
यही तमन्ना है मुद्दतों से बनाके बारीये आपनी आसी
के घड़े न अपना नान क्षेपें हाथे, असीके दीवारो दरके जीये·

ग़ज़ले छनरीमा ३०५

आती थी मेरे हूर, मुझे देख हट गई;
घूंघट के बीच हाय, ज़बां उर पलट गई·
आहट को मेरी पाके वोह, यों जरसे हट गई·

अरपर वोह परीयांके, अपनेसे चिमट गये.
की छेडछाड मैंने जो मारफ़तसी उसे ;
जो ठेपिलियार शरमके मारे सिमट गये.
कुछ बाक़्त क्या हुआ बग़ल, अंदाज़ येह बुरे ;
हय हय बुरोंसे सुबहकी, छातीन ईरगये.
ठिनशाकी गुफ़्तगू येह, धुआंधार है ग़ज़ब ;
आकर बहार जिसके, गलेसे लिपट गये.

ग़ज़ले सौदा-३०६

गर तुझमें है वफ़ातो, जफ़ाकार कौन हय ;
दिलदार तु हुवातो, दिलआज़ार कौन हय.
नासाह मुहँलोंसे, तेरे सामने तसे ;
पूछा न येह कलू परसे, दीवार कौन हय.
हरशब शराब ख़ारो, हर अेक दिन सियाहमस्त ;
आशुफ़्ता बुझो लरपरी, हस्तार कौन हय.
सौदाको तुझमें इश्क़से करते हैं आज क़त्ल ;
पेहचानता हय तू येह गुनहगार कौन हय.

ग़ज़ले सौदा-३०७

सायनके बादलोंकी तरहसे भरे हुवे ;
येह वोह नयन हैं जिनसे के, जंगल हरे हुवे.
अय दिल येह किसने बिगड़ीके, आती हैं कोअसके ;

लख़्ते जिगरकी नाज़शोंको, आगे धरे हुवे·
पलकें तेरी कहां नसई आरा हुईके यहां ;
अई याने ओहरहके, नजरहम परे हुवे·
आंखोंको तेरी क्युंके, मैं जांचूंके यह गिलास ;
जलते हैं मेरे दिलकी, जराअ़त यरे हुवे·
जूंदोंकी जमघरोंसे यह, लरते हैं यक दिगर ;
लडके मुझ आंसुओंके, जिपर मजगरे हुवे·
छिनसाई अपना सोंच्ये, फिरको जसुन खुदा ;
मुनसिई ले जोसते हैं, सो तुमसे डरे हुवे·
नजदीक अपने रहनेसे, मतकर हमें तु मन्न ;
हैं लाखकोस जब, तेरे दिलसे परे हुवे·
मजलीसमें छोकरोंकी, जो हुजरेसे शैखजी
आये तो फिर खुदाने कहा, मसखरे हुवे·
सौदा निकलन घरसे, के अब तुमको ढूंढते ;
लडके खडे हैं पथरोंसे, दामन भरे हुवे·

गज़ले आसिई· ३०८

यह अश्क चश्मोंमे अब, जम रहे रहे न रहे ;
हुः ख्वाब जहरमें कोई, दम रहे रहे न रहे·
तु अपनी शोखसे, मेरो जहांसे मत गुजरे ;
तेरी बलासे मेरा दम, रहे रहे न रहे·

क़मर को होताहै हरमाहमें कमालो ज़वाल;
तेरे भी हुस्नका आलम, रहे रहे न रहे·
ग़रूर है मुझपे तेरे, हुस्नुमा सनम लेकिन;
हमेशां गुलपे यह शबनम, रहे रहे न रहे·
शिताब आओ तेरी दीद, कुछ मोयस्सर हो;
यह दम लबोंपे है, अबथम रहे रहे न रहे·
न वस्लमें हो जुदाई तो, क्याकरे आसिफ़ी;
यह इत्तिफ़ाक़ है बाहम, रहे रहे न रहे·

ग़ज़ले आसिफ़ी ३०९

तुम्हारा दिल अगर, हमसे फिरा हय;
तो बेहतर है, हमाराभी ख़ुदा हय·
हमारी कुछ नहीं तक़सीर लेकिन;
कहो हमने तुम्हारा क्या किया हय·
करो हो ग़ैरक़दर, बेख़तर हमसे;
सभी तुमको कहेंगे, बेवफ़ा हय·
वोह आहमक़ है, कहा है जिसने तुमसे;
मिलो जिससे तुम्हारा, दिल मिला हय·
अबस बेदिल करो मत, आसिफ़ी को;
मुसाफ़िर है शिकस्ता हय गदा हय·

ग़ज़ले आशिक़ाना-३१०

सांज आकर बिगर में अडती ह्य ;
रीइस जब तेरी, याद पडती ह्य.
यहां हम मोरे जाऍं, क्युंके भला ;
क्या बुरी तरह आँख लडती ह्य.
पेयमें लाके हम गरीबोंको ;
बुजई किस किस तरह अकडती ह्य.
तुझको जानेदूं क्युंके जाना बराज ;
दिलकी बस्ती मेरी उजडती ह्य.

ग़ज़ले हिज्जर-३११

मरता हूं तेरे ईश्क़में, सरशार ख़बरले ;
टुक मेरे दिले ज़ारकी, ऍ यार ख़बरले.
ऍ जान तुही जाके ज़रा शूख़से केहना
मरता है कोई जबसे, दीयार ख़बरले.
अल्लाहही बचाये मुझे आतशी ग़मसे ;
या तुही मेहर खाके, मेरे यार ख़बरले.
किस तरह सुलायाहै, मेरे दिलको तूये ज़ार ;
मरताहै तेरा तालिब, दीदार ख़बरले.
कुयेमें तेरे आनेकी, ताक़त नहीं ऍ यार ;
मरता है पडा बसतरे, जाकर ख़बरले.

येह् हाल मेरा देखके, हैरां हैं तबीबां;
अयता है कहीं इश्क़का, बीमार असरसे.
ऐ नाज़नीं ने नाज़, उठाते तेरे दिलबर;
पूछेंगे सख्ती कयओ, बाहर असरसे.

ग़ज़ले ताबां ३१२

इश्क़ क्या शै है किसी, कामिलसे पूछाचाहिये;
किस तरह जाता है दिल, बेदिलसे पूछाचाहिये.
क्या लड़ाईने में मज़ा है, क़त्ल हो प्यारेके हाथ;
उसकी लज़्ज़तको किसी, बिस्मिलसे पूछाचाहिये.
जिसने उसका ज़ख़्म खाया, वोः उसे मालूम हय;
तेग़ अबरूकी सिफ़त, घायलसे पूछाचाहिये.
यारके मिलनेकी हमको, कोई तरह आती नहीं;
तरह मिलनेकी किसी, वासिलसे पूछाचाहिये.
आहोनालेकी कड़ी कत देखता हूं हिज्रमें;
क्या गुज़रती होगी ताबां दिलसे पूछाचाहिये.

ग़ज़ले सौदा ३१३

खुबीए रुख़्सारे ख़ूबां, गुलसे पूछाचाहिये;
इज़्तिराबे आशिक़ां, बुलबुलसे पूछाचाहिये.
ले गुज़रती है हमारे हालपर, जुल्फ़ोंको देख;
उसकी माहियतके तई, सुम्बुलसे पूछाचाहिये.

ज़हदसे जूनां जलाहै, जाहद नौशोंके उपर ;
जे ख़ुदीकी जात ज़ा, कामिलसे पूछा चाहिये·
अहले कशामीरो सक़ाहां, ऐश करते हैं मुदाम;
हिंदकी सलतनतके लये, काबुलसे पूछा चाहिये·
लोग कहते हैं अबुलज़ैर हल सोदा हुवा;
कुछ ख़्याल इस मरज़का, काकुलसे पूछा चाहिये·

गज़ले क़िस्मत· ३१४

गर वोह बुते काफ़िर शबे, महताबपर आवे ;
ऐक माह दोदम वोह, फ़लकको नज़र आवे·
मिज़गां तेरी जिस दिनसे, मेरे दिलमें खुबी हय;
ना सुकलह न देखा कोई, जख़्से जिगर आवे·
मक़दूर है किसका जो, तेरे हुक्मको टाले ;
रुस्तम जो न आवे तो वहीं, उसका सर आवे·
तू बरसरे बाज़ार, जहां जल्वनुमा हो ;
ख़ुरशीद फ़लकपरसे के, नीचे उतर आवे·
जूं वोह मुजव्वर हो, शबे तार हमारी ;
क़िस्मत वोह अगर चांदसी सूरत नज़र आवे·

गज़ले सिराज· ३१५

ख़बरे तहैयुरे इश्क़ सुन, न जुनूं रहा न परी रही;
न तो तू रहा न तो मैं रहा, जो रही सो बेख़बरी रही·

शाहे बेखुदीने अता किया मुझे, अब लीबासे बरहनगी;
न खिरदकी बखीयहगरी रही न, जुनुंकी परदहदरी रही·
चली सिम्ते गैबसे क्या हवा कि चमन जुहुरका जल गया;
मगर एक शाखे निहाले गम, जिसे दिल कहें सो हरी रही·
नजरे तगाफुले यारका गिलह, किस जबांसे बयां करूं;
कि शराबे सद कदह आरजू खुमे, दिलमें थी सो भरी रही·
वो अजब घडी थी कि जिस घडी लिया दरस नुस्खे इश्कका;
कि किताब अकलकी ताकमें, ज्यों धरी थी त्युंही धरी रही·
तेरे जोशे हैरते हुस्नका असर, इस कदरसे यहां हुवा;
न तो आयनेमें जिला रही, न परीमें जल्वहगरी रही·
किया खाक आतशे इश्कने दिले बेनवाये सिराजको;
न खतर रहा न हजर रहा, जो रही सो बेखतरी रही·

गज़ल कुदरत·७१६

हम असीराने चमन, हमसे चमन छूटे हैं;
हाय ऐशामें गरीबोंके, वतन छूटे हैं·
गम्जये खूनसे दिल देके, मैं ऐसा भागा;
जैसे सैयादके हाथोंसे, हरन छूटे हैं·
अब लबके तेरे शाही घोडे, बुने हर मूसे;
साफ़ कुव्वार अपूं जेरे, कईन छूटे हैं·
शाहे दिलबरांकी मुसीबतमें, लिखूं क्या कुदरत;

तनसे जां निकले है, और जानसे तन छूटे हय.

ग़ज़ले कलंदर ३१७

बे नसीबी पे जो दिल, अपने अबस रोता हय;
जो लिखा कातिबे कुदरतने, वही होता हय.
सईके मुल्के अदम तुझको है, आखिर दरपेश;
जागे ग़फ़लतसे तू बेदार हो, क्या सोता हय.
नहीं मुमकिनके मुगीलांसे, होवे पैदा.
फलभी पाता है वोही, जो कोई कुछ बोता हय.
करले कुछ काम ग़नीमत है ये: ऐयामे ख़याल;
बाज़यो लग्ज़में क्युं, उम्रको तू खोता हय.
ग़मकी पर्वाहीसे कलंदर तू, न कर दिलको तंग;
दहरका दाममें जला ऐसाही, कुछ होता हय.

ग़ज़ले रिंद ३१८

कलजो हम यारकी, शमशीर तले बैठ गये;
वो: क़ोत याल रहे, हम न रहे बैठ गये.
हम उठे यारके दरपरसे, चले सौसौ बार.
सैद मजरूहके, मानिंद चले बैठ गये.
गुलशने दहरमें दोरोज़, अबस आनके हम;
सरूवकी तरह न इले न इले, बैठ गये.
जब हुआ मजमये, अगयार सुनो हज़रते दिल;

उठ चले आनके तुम यहां भी, चले बैठ गये·
वेतो हम जुरअते कुरबान हों, हम घड़के रोवें;
हम भी घबराके न हारे, न चले बैठ गये·
अर्श की सैर से और आहके शोलेसे मेरे ;
अक़ल और होश के, घरबार जले बैठ गये·
कैसो इरफ़ानसे ये शिंद मिले, हम इल राज ;
राजे यहां तक गले मिलमिलके, गले बैठ गये·

गज़ल सोहाना ३१८

नसीम है तेरे कूचेमें, और सबा भी हय ;
हमारी ख़ाकसे रुउ देख, कुछ रहा भी हय·
तेरा गुरूर मेरा घ़िनञ़, ताकुजा लसिम;
हर एक बातकी आख़िर, कुछ घ़ीते हाभी हय·
जले है शम्अ़से परवाना, और मैं तुअ़से;
कहीं है मेहरभी जगमें, कहीं वफ़ाभी हय·
ज़माने शाक यह सिवा, अब जमानेमें हैं हाल;
कोई किसीसे है हमदम, और आश्नाभी हय·
सितम रवा है असीरोंपे, घ़िस्कदर सैयाद ;
चमन चमन कहीं बुलबुलकी, अब नवाभी हय·
समझके रखयो क़दम, दश्ते ख़ारपर मजनूं;

के इस जमानेमें सौदा जिरहनांपास हय.

ग़ज़ले आशिक़ ३२०

आंख क्युं तूने लला हमसे मिलाई प्यारे;
बुझ गई थी सो फ़िर, अब आग लगाई प्यारे.
दोस्ती मेरी तेरी यार, मिलाये अल्लाह;
गरचे बदनामी ज़मानेमें, उठाई प्यारे.
जानके दिलमें मेरे लडके है, अब आतशे इश्क़;
शक्ल तुने जो नहीं अपनी, दिखाई प्यारे.
मैं सिवा तेरे किसीको भी, न देखूं हरगिज़;
साफ़ ने अपने अगर होवे, खुदाई प्यारे.
दिलसे दिल आंखोंसे आंखोंको, मिलाकर तुझसे;
फ़िरको खुश आती है अब, तेरी जुदाई प्यारे.
हक़में इक़लीमकी शाही, नहीं खुश आती हय;
खुश नुमा है तेरे कूचेकी, गदाई प्यारे.
चैन तो आराम नहीं, अक़्ल गई होश गया;
दिलको आशिक़के नज़र, जबसे लगाई प्यारे.

ग़ज़ले सौदा ३२१

जूं गुंचा तु चमनमें, जो दे क़बाको खोले;
फ़िर गुलसे अय प्यारे, बुलबुल कभू न बोले.
आवेगा वोह चमनमें, तडकेही पै कबीको;

શબનમસે કુહદ બુલબુલા, પ્યાલે ગુલોંકે ઘોલે.
બાગે જહાંમેં આકર કુછ, હમને ફલ ન પાયા;
એક દિલ મિલાકે જિસ્પે હેં સેકડો મલોલે.
એસાહી બણી બણી કરતે હોતા સિધારો;
ઘેસ દિલ્પે કલમે હોની સો, આજહી યો: હોલે.
કુપ બોલના બધાહે, હરચંદ પરન ઘેતના;
મુંહ બએં ચશ્મે આશિક, તોલી યો: લબ નખોલે
ચશ્મે પુર આબહૂં મેં, બું આઘના હુબાબી;
રેકરૂકકે પડ ગએ હેં, છાતીમેં સબ ફફોલે.
કોન એસા બબ કેહ યેહ, સોદાગરીમેં ઉસ્કી;
લા તુઝકો લે ચલે હમ, દિલ ખોલકરકે રોલે.

ગઝલે રદીફત. ૩૨૨

બેશાબે હિજૂર, મુંહ દિખાતી હય;
બન રદીફતકી, લબપે આતી હય.
યેહ બુદાઈ, બિગર જલાતી હય.
આંખ લી અશ્કે, ખૂં બહાતી હય.
દિલતો કુછ ચક બયક નહીં મિલતા;
પેહલે યેહ આંખ, ઘર ડુબાતી હય.
ચશ્મે પરીઆંતાકે, સમઝ હય યેહી.
જેસા કરતી હય, વેસા પાતી હય.

ग़ज़ले अईसून · ३२३

सदक़ेमें तेरी ज़ुल्फ़ोंके, और तार तारके ;
दस्तारे गुल अनार, क्या ख़ूब दारके ·
बुलबुलने चकुले क़दके, रोरोके यूं कहा ;
सैयाद वास्ते मेरे, परवरदेगारके ·
बेचोगे तो सहीह तरह, इतनातो कीजियो ;
दीजेतो हाथों हाथ, किसी नौ बहारके ·
येह वतन है हमारा, तुम पूछते हो क्या ;
हम रेहनेवाले हैं, इसी बागो बहारके ·
अईसूं तु शाद रहियो, ज़माना करेगा क्या ;
हम हैं गुलाम उसशाहके, दुलदुलसवारके ·

ग़ज़ले यक़ीन · ३२४

करते हैं अपने बाल, दिखा मुब्तला मुझे ;
इस पेचसे बुतोंके, निकाले ख़ुदा मुझे ·
दिलनेतो मेरे दी है जगा, दूरनेकी क़दर ;
करती है बाल बालसे, चलते दग़ा मुझे ·
बरो नज़ांमें यार ओहोत, हो गया दिलेर ;
करनीतो की परस्त, न आई वफ़ा मुझे ·
मैं गो रहा हूं यारके, पांउपर अय यक़ीन ;
आई है रास्त सायअे, गुलकी हवा मुझे ·

ग़ज़ले नियाज़ ३२५

सनम है गुलबदन है, महजबीं हय ;
भला कहिये वोह क्या क्या, कुछ नहीं हय·
वोह सब जा है, वोह किस जगह नहीं हय·
गरज़ उसको, जहां देखो वहीं हय·
गया उधरको, फिर इधर न आया ;
अजब कूचेकी तेरी, सर ज़मीं हय·
मेरे अश्कोंका, और नलोंका शाहिद ;
ज़मीनो आस्मां, अर्शे बरीं हय·
नहो किसके मुक़ाबिल, हूरो ग़िलमां ;
सनम नामे ख़ुदा, वोह नाज़नीं हय·

ग़ज़ले जौहर ३२६

ख़ुलेंगे शब जो बालके दहलर, इधर हमारे उधर तुम्हारे ;
तो क्या क्या गुज़रेगी आह दिलपर, इधर हमारे उधर तुम्हारे
लड़ोन हमसे ऐ मेरे दिल्बर, ये बात जाने दो मानो कहना ;
नहीं तो मशहूर होंगे घरघर, इधर हमारे उधर तुम्हारे·
हमारे दिलपर है दागे हसरत, तुम्हारे मुंहपर है दागे चीचक ;
यह दोनो जख़्मोंके मिस्से अख़्तर, इधर हमारे उधर तुम्हारे·
तुम्हें जो अपनी क़सम है, जाना मिलातो जैसा मिला हो किसे ;
ग़मे जुदाई न आये दिलपर, इधर हमारे उधर तुम्हारे·

મિલૂં મૈં ક્યુંકર ફુગાહૂં હૈરાં, અગર યે દોનો તરફ હૈ આહ્ડી;
ફિરે હૈં જાસૂસ યહાં તો ઘર ઘર, ઈધર હમારે ઉધર તુમ્હારે.
સિતમ કા ક્યા તુમ જવાબ દોગે, જબાને પૂછેગા તુમકો એ
લિફ઼
હોવેંગે મુનસિફ઼ જરોને મહશર, ઈધર હમારે ઉધર તુમ્હારે.
શરાબ હૈ યેહ સમઝકે પીના, ખરાબ કહતા હૈ ઉસ્કો આલમ;
કહીં નિશેમેં ભુલેં ન આહર ઈધર હમારે ઉધર તુમ્હારે.

ગ઼ઝલે આસિફ઼ ૩૨૭

જસ ઘડી તેરી આસ્તાંસે ગએ;
હમને જાના કે દો જહાંસે ગએ.
તેરે કૂચેમેં નક઼્શે પાકી તરહ;
ઐસે બૈઠે કે ફિર ન યહાંસે ગએ.
ઈશ્ક઼ હાથોંસે તેરે ક્યા કહિયે;
નામસે ગુઝરે ઔર નિશાંસે ગએ.
શમ્અકી તરહ ગલતે ગલતે હમ;
સુબ્હો એક દિનકે જિસ્મો જાંસે ગએ.
એક દિન હમને યારસે યેહ કહા;
અબતો હમ તાક઼તો તવાંસે ગએ.
હસ્કે બોલા કે સુનતા હૈ આસિફ઼;
યુંહી કહ કહકે જાનો જાંસે ગએ.

ग़ज़ले रक्स· ३२८

कि रूके तेरे देखे, किस शानकी सुरखी;
पोंहचे न जिसे पंजे, मरजानकी सुरखी·
तारीफ़ दहनकी करूं, या लबकी नज़ाकत;
मिस्सीकी उधाहर कहूं, या पानकी सुरखी·
अल्मास नज़र आते हैं, याकुतके मानिंद;
पडती है करन फूलपे, जब कानकी सुरखी·
कातिल मुझे करते हैं, कोई पेहचान न लेवे;
धो डाल ज़रा गोरीए दामानकी सुरखी·
सुन्ये यह ग़ज़ल मुजसेती, जब ताज़ रक्सकी;
दिखलाई तुम्हें साई, गुलिस्तानकी सुरखी·

ग़ज़ले फ़िदवी· ३२९

आहूली ख़िजल होवे, मुसव्विर ज़रा दमले,
तस्वीर खिंची आती हैं, नरगिसका क़लमले·
देखा नहीं तु अहमद, मुख़्तारका लश्कर;
जिबरीलली जिस कौलमें, चलता है ज़लमले·
गरमीसे अरक़ होगये, चलते हुए ये: अरक;
इस सायके मिज़गां तले, कुछ बैठके दमले·
हम दिलको गया बैठ, तसव्वुरमें उसीके;
और फ़िरली अक़लमंदीसे, चल राह अदमले·

इस्मतकी पुरसिशके लिये, शौख हुवे तुम;
डरजेकोयले नामे खुदा, नामे सनमसे·
यह बारगह शेरे खुदा, अज्जे अदब हय ;
मननूंको सदा पोंहचीहै, तू उसे रहमसे·
नाहकको यह तोहमत है के, गैरोंपे है आशिक;
गर तेरे सिवा गैरको, चाहूंतो कसमसे·
रातोंके तडपे चोंक पडे, नींदमें रुस्तम ;
गर ख्वाबमें देखे, असदुल्लाहके हमसे·
फिदवीतो अबस अपना, गिरेबां है पकडे ;
लेताहै तो दामाने, अली मुस्तफह कमसे·

गजल·३२९

किसको दिखलाउं, आबले दिलके ;
जख्म ताजे हुवेहैं, छिलछिलके·
उसकी नैरंगीपर, फिदाहुं मैं
गुल बनायेहैं, जिसने हंसगिलके·
भुलके नागहने, आपकी साहब;
दिल लियाहै हमारा, हिलहिलके·
तुझसिवा बागका यह, क्या अहवाल ;
फूल कुमला गयेहैं, खिलखिलके·
ईसखता अपनेकी, करें तौबह ;

रंज जैयेहै, तुमसे मिल मिलके.

ग़ज़ले नासिख़ ३३०

फिर बहार आई चमनमें, जोशे दिल आले हुवे;
यह मेरे दागे़ जिगर, आलशीके पर डाले हुवे.
फिर तरफ़ छोडूं चढाचढ, तेरी जुल्फोंका ख़याल;
अेक मुद्दतसे यह, डालेनागहैं पाले हुवे.
वाह क्या तासीर है रुख्सारे आलशी नाज़की;
शोलेसे अे नख्याल तेरे, डालके पाले हुवे.
जब रहे तारीकमें, रूपकूंजे बलाके चले;
आगे आगे अपने मश्अल, आतशी लाले हुवे.
पाके नाजुक उसने जबर पाहपारी पत्थरपर;
पार हाथे संगे मरमर, रुखके गाले हुवे.
वो परी पैकर कहा, करता है अकसर फ़ख्रसे;
अबतो नासिख़ली हमारे, चाहनेवाले हुवे.

ग़ज़ले जऊक़ ३३१

येः रुखे यार नही, जुल्फे परेशांके तले;
है नेहां सुब्हे वतन, शामे ग़रीबांके तले.
जरकसी लेगअे उस, उसकी चमकती देखी;
तिफ़्ले अश्क आही छिपे दामने मिज़गांके तले.
अेक नेहां दागे़ जिगर, सीनेमें रख्ता हूंके मूं;

जाहसे शम्अ छिपाये, कोई दामाके तले.

ऐसे है लोके कूं, ऐ गुलेफ़ंदां तुझबिन ;

बैठकर गिरियां किसी नख़्ल गुलिस्तांके तले.

नहीं मिलनेकी जगा तुझको, जज़ुन कूने मलार ;

जिसे आसूदगी ऐस गुंजे, गरदांके तले.

ग़ज़ले नज़ीर ३३२

ज्याले उसने दिखाया, मेरा जी जलता हय ;

फिर खुदाकी नज़र आया, मेरा जी जलता हय.

उठ गई मेरी नज़ांसे तो, वहांकी लज़्ज़त ;

जो मज़ा ऐश्क़में पाया, मेरा जी जलता हय.

मैं ख़तायारकूं ख़तक्युं, लिखूं अय साहब ;

ऐसा लोगोंने सिखाया, मेरा जी जलता हय.

कौन कहता है तेरे, ऐश्क़से जंजन रहा ;

जीतेजी तूने जलाया, मेरा जी जलता हय.

अय नज़ीर उस गुलेखंदांकी, मुहब्बत तुझको ;

दम बदम उसने सताया मेरा जी जलता हय.

ग़ज़ले जेहार ३३३

कौनहै जाहेर खूबीमें, तेरे हम संग हय ;

हुस्नके मीज़ंमें तेरे मेहरो, महपा संग हय.

सुरमई आंखोंका तेरे जो, कोई बीमार हो ;

अेक मील उसके लबे रखना, कदम ईरसंग हय.
मैं जे दीवाना हुवा सरफ़ैसे अरजाजे जुनूं;
हाथमें पथ्थर लिये, हरतिफ़्ल मेरे संग हय.
बसके लड़का आशिक़ोंका, जानमां हरयक़ेले जान;
तेरे सर कूचेमें तेरे, खिश्त है या संग हय.
सख्त बरी है मुझे, ज़ालिम तेरी संग दिली;
आह जिसने आस्याके संग उपर संग हय.
वोह सदा गिरदीर करे है, आस्या फिर फिर मुदाम;
मुस्ते गंदूमके लिये, छातीपे मेरे संग हय.
वोह जवाहर पोशीके देखाहूं, मैं याकूत लब;
उसकी रंगी नीके आगे, लालती अेक संग हय.
शेखकी मसजिदमें जना काम क्या बेदारका;
सिजदेमें अपना सनम ले, नारीक़ोंका संग हय.

ग़ज़ले जाहरीशाह-३३४

किसी मस्तके आनेकी आरज़ू हय;
के साक़ी लिये सागिरे मुश्कबू हय.
समाया है बसके तू आंखोंमें मेरे.
जिधर देखताहूं उधर तुही तू हय.
बताऊं मैं क्या अपना हाले परेशान;
ज़यां ज़ुल्फ़े दिलदारके रूबरू हय.

चलो इश्के इरशादपर, झालेहाको ;
मगर आजे शीरीसे, लाज़मखुश्नू हय.
निकल जये हम, तेरे क़दमोंके उपर ;
यही दिलकी हसरत, यही आरजू हय.
गुलिस्तांमें आके, हरएक गुलको देखा ;
न तेरी सीरंगत, न तेरी सीबू हय.
सतायाहै नाहक़ हमें तूने ज़ालिम ;
येह छेनसाई अल्लाहके रूबरू हय.
किया चाक वहशतने, ऐसा गिरेंबान ;
न सीनेके क़ाबिल, न आजे रफ़ू हय.
शहीदे जनके गरदंपे, होता हय ज़ाहिर ;
येह किस कुश्तए, जे गुनहका लहू हय.
अनेस मुझको हंस हंसके, देते हो गाली ;
ज़बांको संभालो येह, क्या गुफ़्तगू हय
अगर अजकी जारी रहे यस्त जोला ;
छुरी और मुरग़े, सहरका, गुलू हय.
रहे सायए पंजतन, जाहशाहपर ;
ख़ुदायंदे आलम, निगहबान तू हय.

ग़ज़ल नम्बर ३३५

हज़ारजार थे हम याहसे जलातेथे ;

तो किस ग़ुरूरसे तुम, बेज़ार आतेथे.
जलीतो शरते वक़्त, होचुकी अदा जसकर;
ऐसी भरोसेपे तुम, दोस्ती निभातेथे.
ज़रह तो याद करो, जब वक़्त वोह क्याथा;
गलेमें हाथथा और, मुंहसे मुंह मिलातेथे.
लबे शकर वोह अजब, दिनथे भूलतेही नहीं
तुम्हारे मुंहसे जो हम, गालियां भी खातेथे.
अगरचे रूठके जातेथे, फिरभी हम तुमको;
गलेसे अपने लगा, पांउ पड मनातेथे.
हरएक तेग़े सितम हमको, फूलकीथी छडी;
ऐ गुलबदन तेरी क्या क्या, नाज़ उठातेथे.
हज़ार हैफ़के कहते हो तुम, ज़फ़र मत आ;
कभी ज़बांके ऊपरभी, येह न लातेथे.

ग़ज़लशेरार ·३३६

क्या निकले सुख़न आशिक़, दिलगीरके मुंहसे;
कोई बात सुनता होगा, न तस्वीरके मुंहसे.
किसकी निगह चश्मने, मारा है तमाचा;
बहता है लोहू खंजरो, शमशीरके मुंहसे.
यूसुफ़को किया क़ैदके, जो ज़िंदानमें खुश हो;
आती है सदा कानमें, ज़ंजीरके मुंहसे.

खिड़कीके तेरे हुस्नकी मैं वस्फ़ कहुं क्या;
सुन मुंहसे बयानोंके, हरऐक पीरके मुंहसे.
देता है दोआ तुझको, सनायां यह शरर बज;
आमीनकी सदा निकले है, तासीरके मुंहसे.

गज़ल लेयली ३३७

जिस्को जन्नत है, सबनके दीदकी;
उसको फ़ुरापड़ती है, सुब्हे ईदकी.
मुझके उपर जुल्फ़ ने, दरयाने हुस्न;
मौज है यह चश्मसे, ए ख़ुरशीदकी.
दिल मेरा मोती हो, तुझ बालीमें जब;
कानमें केहता है, बातें जेदकी.
तुझ दहनको देखकर, बोला वली;
यह कली है गुंच, ए उम्मीदकी.

गज़ल लेसिलम ३३८

दर्द मंदोंसे न पूछोके, किधर बैठ गये;
तेरी मजलीसमें गनीमत है, जिधर बैठ गये.
है गरज़ दीदकी यहां, काम तकल्लुफ़से नहीं;
वाह इधर बैठ गये, वाह उधर बैठ गये.
मुश्किल उठनेके नहीं, यारके कूचेसे फ़क़ीर;
बैठ बोलसेके जिये, बांधके जड बैठ गये.

पीरोमुरशीदकी क़सम है, यही लेंगे यही;
नजके बिस्तरपे नमजा जोस, क़मर बैठगये·
कर गया काम जे माश्शूक, सितमने ज़ खुदा
सैकड़ों मुर्ग़ हवा बांधके, पर बैठगये·

ग़ज़ल बेनज़ीर · ३३९

मुर्ग़े दिल मतरो यहां, आंसू बहाना मना है;
इस क़फ़सके कैदियोंका, आबोदाना मना हय·
तेरीही दीदारसे अब, हमने सरपरका किया;
रोज़ने दीवारतक, आंखें मिलाना मना हय·
क़त्ल करकर मुजको अब, संगी दिलोने युं कहा;
क़त्ल होजना लेकिन, तडफ़ना मना हय·
तडफ़ना मत देखना, ज़ंजरतले ऐसे देदिल;
इश्क़के क़त्लमें दस्तोपा, हिलाना मना हय·
ऐ नज़ीर तुमको हमेशा, चाहिये इशरत मुदाम;
अब तुम्हें चालीसदिन, मेंहदी लगाना मना हय·

ग़ज़ल · ३४०

वोह सनम हाल मेरा क्या जाने;
हूं मैं किस फ़िकरमें खुदा जाने·
उसके मिलनेकी मुजको तोहमत हय;
वोह कहां मैं कहां खुदा जाने·

હમતો રોતેહેં હસ્તેહેં અગયાર ;
કદ્ર બુલબુલકી ઝાગ ક્યા જાને·
હોઠ ચાટાકરે વોહ સારી ઉમ્ર ;
લબે શીરીંકા જો મઝ઼ા જાને ·
સુનકે અહ્‌વાલ મેરા કેહને લગા ;
ઐસા ઝગડા મેરી બલા જાને·
ઐસે મઅ઼્શૂક઼સે ડરો યારો ;
ખૂન આશિક઼કા જો હિના જાને·
જો ખુદા ખુદ કિસીકે દોસ્ત નહીં ;
ઉસ્કો દુશમનહી અપના જાને·

ગઝ઼લે ઔસાઈ·૩૪૧

વોહ કહાં જૈસે રહે, જો બેવફાઈ કરગએ;
મરગએ આખિર ન કિસ્સે, આશનાઈ કરગએ·
ઉમ્રે જો પાયાંથે અપની, ઐસ્કદરના જાનહો;
મરગએ ઉનકો ન છોડા, જો ખુદાઈ કરગએ·
આરસીમેં અક્સ અપના દેખકર લાએ ગુરૂર ;
ચાર દિનકી ઝિંદગીમેં, ખુદ નુમાઈ કરગએ·
ઐબ જોઈ કરકે અક્સર વોહ, જો હસ્તેથે કિસે·
હાથસે અપને વોહ અપની, જગનુમાઈ કરગએ·
રેહ ગયા ઔસાઈ અંતઔર, આખ઼િરશા દોનો ગએ;

न भलाई करगये, औ न बुराई करगये.

ग़ज़ले ईशरत ३४२

शबे फ़िराक़में दिलपर, फ़लक़ अलीसे हय ;
सहर है दूर मेरा रंग, फ़क़ अलीसे हय.
अली छिपा नहीं मैं हाल दिलका अे क़ासिद ;
हवा अे शौक़में उड़ता वरक़, अलीसे हय.
हनोज़ ईद न हुवा हय नहीं, तेरा बिस्मिल ;
के ज़लज़लेमें ज़मींका तबक़ अलीसे हय.
ईरादा सैरका करता है, जबके वोह गुलरू ;
यह नाज़ुकीके ज़मीपर, अरक़ अलीसे हय.
किसीने शामके आनेको क्या कहा ईशरत ;
यह मुहपे आपके फ़ैली शफ़क़ अलीसे हय.

ग़ज़ले हैदरी ३४३

बाग़े महफ़िलमें तेरे कलतो, अजब घूम रही ;
राह पाई न कहीं बाद, सबा घूम रही.
मोत्या और चंबेली, गुले नस्रीनो गुलाब ;
केतकी मस्त हो डालीपे, सदा झूम रही.
पानतो क़त्ल हुअे यारके, लबसे मिलकर.
बे कलीथी सो हिना, बरके पा चूमरही.
ज़ाइक़ा ठीक नथा, क्या करे पर हैदरी बाज़ ;

अक्स पंजेकी तरह, आईनेतई घूम रही·

ग़ज़ले नासिख़·३४८

नेजमें याक़ूबे, यार नज़र आता हय;
सीनेमें रौज़ने दीवार नज़र आता हय·
हस्ते गुरबतमें निगह, अपनी किधर जातीहय;
वही कूचा वही बाज़ार, नज़र आता हय·
मय परस्त ऐसे हैं, सोते हैं अगर मस्जिदमें;
ख़ाबमें ख़ानए, ख़म्मार नज़र आता हय·
चांदसा चेहरए ताबांहै, मगर ईस्पगली;
ज़ुल्फ़में रंगे शबे, तार नज़र आता हय·
नाग बनता है यही, पैके अजल बालींपे·
जब मुझे क़ासिदे, दिलदार नज़र आता हय·
गरचे हूं हिंदमें लेकिन, मुझे नासिख़ हरदम;
रौज़ए अहमदे, मुख़्तार नज़र आता हय·

ग़ज़ले यक़ीन·३४५

शबख़ूंमें ख़ालोंकी, हुस जानेको क्या कहिये;
क्या काम किया दिलने, दीवानेको क्या कहिये·
आशिक़ भी रहे ज़लता, माशूक़के काम आवे;
क्या ख़ूबहै ज़लजला, परवानेको क्याकहिये·
दिल छोड़ गया हमको, हिज्रमें तवक़्क़ो क्या;

અપનેને કિયા યેહ કુછ બેગાનેકો ક્યા કહિયે.

તકદીરકો તસલિમ કરું, કુછ ગમ નહીં સમાયા;
ઈરશાદ હે ઘિસ નાહક કે, મરજાનેકો ક્યા કહિયે.

સજનેમે યહી આફ ક્યા, ચોરીસે ફિરતે હે
ફિર દોસે ન કહિયે તો, દીવાનેકો ક્યા કહિયે.

ગઝલે જલહાર. ૩૪૬

દિલકો પાસાથા જો હોત, હમને બરદારીસે;
નાઝ બરદારીસે, હુસ્યારીસે ગમ ખ્વારીસે.

હુસ્ને સાહેબકી શેરાઈતપે, નઝર કર બેઠે;
અપને બૂઝે પે હુશ્યાન કે, હુસ્યારીસે.

હમસે બાતિનમેં ખફા, ગેરોંપે, જાહેરમેં નઝા;
ચાલી ઉમ્મીદ નથી, શરતે ચદાદારીસે.

સાદગીપર યેહ સિતમગારકે ધોકા પાયા;
અપના ઇમાન બદલતા હે, યેહ અયારીસે.

શુક્ર હક સબકી દૌલત, કે શબ હિજરકે દિન;
ચસ્લ હાસિલ હુવા, તાલેકી મદદગારીસે.

નાને ખત બુજ્ર અદા, ચશ્મ મિઝહ ઓર અબરૂ;
સબકે સબ દુશ્મને, કાતિલ હે મેરી યારીસે.

સો રહે આન લિપટ, અપને સનમસે જલહાર;
નીંદ આતી હે શબે, હિજરકી બેદારીસે.

ग़ज़ले शहां. ३४७

माश्शूकके आनेकी, शिताबी ख़बर आवे ;
अल्लाह करे दिल्की येह, उम्मीद बर आवे.
ख़ुरशीद ख़जल होके, छिपे अब्रके अंदर ;
महफ़िलमें अगर आनयोह, रश्के क़मर आवे.
करता है निसार उस्पे, कुन्कु ख़ोशागे परवीन ;
कानोमें करनफूल, पहनकर अगर आवे.
किस्कामका योह नख़्ल, जिसे फूल न फल हो ;
परशाख़ वही ख़ूबके, जिस्को समर आवे.
आता नहीं दिलदार नज़र, किस्से कहूं मैं ;
है मुन्तज़र आंखेंके, कोई पस नज़र आवे.
शाहां तु ख़ुशी अपनीसे, कह मतलये सानी ;
माश्शूक़ है आग़ोशिमें, तेरे अगर आवे.

ग़ज़ले नज़र. ३४८

हमतो आशिक़ हैं तेरे, नाज़ उठानेवाले ;
तुमसे कम होंगे हैं, महबूब सतानेवाले.
अंदकर क़ैद महब्बतमें, ख़बर मेरी न ली ;
दाममें जिस्के फ़से, दाम छुड़ानेवाले.
कुल शाबे वस्लमें क्या, रन्द करीथी घड्यां ;
आन क्या मरगये, घड्याल बजानेवाले.

कल जो रस्तेमें मुलाकात हुई तो येह कहा;
कहां चले हो तरफ़दार जलानेवाले·
गुज़री मुद्दतके मेरे साथ, जपरे नहीं आये;
क्या हुए यारो गले, हमको लगानेवाले·
युंतो अव्वल गुज़रतीहै, मज़ेदारीमें;
न मिले येक मज़ेदार दिखानेवाले·
अबके मिलना हो नज़र, यारसे कहना अेक;
क्या भला हम न रहे, यारो भुलानेवाले·

गज़ले ईना· ३४९

अेक दिनभी तेरे मिलनेकी शब हात न आई;
वोह रात गई रातकी, फिर बात न आई·
औरोंकी शब वस्ल, मोयस्सर हुई क्युंकर;
हम वसलते रह हाथके, हय हात न आई·
इस रातको जाते हुई, तेरी और मेरी·
और इस सिवा दरपेश, मेरे हात न आई·
ले तेहकी बातथी, मगर आनेके खातिर;
कहतेहैं कही तुजसे तो, वोह बात न आई·
अब ज़िंदगी बाकी है तो, फिर आन मिलेंगे;
पर तेरी मोयस्सर भे, मुलाकात न आई·
ईमान दिलोंकी अकलको, सब छोड गये हम;

इन बातोंमेंसे ओरभी कोई बात न आई·
अश्कोंकी धरा छाई है, आंखोंमें इन आंसु ;
इश्तेहारकी नंगी कुली, बरसात न आई·

गजलेनासिख़·३५०

कमर तेरी गुम है, मुझे जुस्तजू हय ;
दहनकी जगहां है यही, गुफ्तगू हय·
जो हैं मुशिगाफ़ उनकी येह गुफ्तगू हय ;
कमरका तेरे जिस्मपें, ओकमू हय·
तेरी आरजू हो, अगर आरजू हो ;
यही आरजू है, अगर आरजू हय·
येह अंधे हैं जो कहते हैं, हमहें हमहें
जो आंखें होंरोशनतो, फिर तूही तू हय·
किया पानी पानी, तेरे कहने ऐसा
के सरये लबे आबे जू, आबजू हय·
न मेंहूं मुखालिफ, न तू है मुखालिफ ;
यही मैं यही तू, न मैं हूं न तू हय·
जही जनेहत है, यही रोशनेहत हय;
जो ओकसू है सबसे, यही यारसू हय·
तसव्वुर जो है, दहकी तरह नासिख़ ;
जिधर देखता हूं, यही रुबरु हय·

ग़ज़ले वहशत ३५१

क्या जला है मेरे सर हम, आश्नाई आपकी;
मार डाले है ग़रज़ हमको, रूनाई आपकी.
किस भरोसेपर रखे कोई, तुमसे अब उम्मीदे वफ़ा
शहरपर मशहूर होगी, बेवफ़ाई आपकी.
खिड़कियां हर आन देते हो, सरे मजलिसमें तुम;
ऐसी क्या साहिर हुई, हमसे जुदाई आपकी.
बात करना हमसे और, आंखें लड़ाना ग़ैरसे;
देखली जस थाह मुश्किल, पारसाई आपकी.
क्या अदावत है मेरी जान, तुमको वहशतसे कहो
अबतलक हमने तो कुछ, मरज़ न पाई आपकी.

ग़ज़ले मुरस्सत ३५२

ले आईना मांग (संथो) उसने जब, यह प्यार निकाली;
मुख़ातसे क्या राह, ज़ुम्हार निकाली.
वोह कुल्ल ये उफ़्तके दपे नज़रोंमें आकर;
मुंहसे न सिकायत कभू, अय यार निकाली.
युं आन तेरे कूचेक, आशिक़ोंने भसिम;
सारी उसकी अजहोहर सरे, बाज़ार निकाली.
न आरेज़ागार दीाड़न था, उसकोतो उसने;
क्युं आमपे खिड़की सरे, बाज़ार निकाली.

हम साथे मुजाने लगे, मुझ अपने घरोंको ;
मैं दिलसे जो येक आह, बारह बार निकाली.

गज़ले महकुम. ३५३

क्यों हो किस्लिये बेज़ार हमसे ;
भला कुछ तो कहो, दिलदार हमसे.
तुम्हारीही रुकावट, का सबब है ;
जो लडते हैं येह सब, अगयार हमसे.
मेरा है सच बहम परवाने क़िस्मत;
हुवे बरहम जो जुदाई, यार हमसे.
जुनूं क्या तुमको कुछ, सौदा हुवा है ;
जो लडता है सरे, बाज़ार हमसे.
मुकर्रर जब कहा, मैंने मअज़ जो ;
भला कुछ तो कहो, दिलदार हमसे.
तु रुककर युं कहा, चल उठ यहांसे
अबस महकुम न कर, तकरार हमसे.

गज़ले जलीक. ३५४

मुरगांने कफ़स करते हैं, अब नगमह सराई ;
क्या फस्ले बहारीकी, चमनसे खबर आई.
आशिकको तो नरगिसने, आंख दिखाई;
कर चाक गिरेबान, नसीमें सहर आई.

उस यारके मिलनेकी जो उम्मीद मुझे थी;
क्या राह गई भूल, कहां तु किधर आई.
जिस घरमें के हम रहते थे, मुद्दतसे हम और यार;
खाली जो मकां देख मेरी, चश्म भर आई.
बीमारकी ले नब्ज़ फ़जर, अपने मसीहा;
क्या फ़ायदा जो उससे, अजलकाम कर आई.
गुलशनमें किसी शख़्सका, ऐक रोज़ है बुलबुल;
मिनकारमें लेआके यहां, फूलधर आई.
ऐसा भी कहीं देख्या हुवा, होगा जहांमें;
आकूल जो ज़लीके निगर, अंगार पर आई.

ग़ज़ले आज़म. ३५५

अरक़ जब उस परीके चेहर, जो पुरनूरसे टपके;
फ़जिस हो गुल्से शबनम, लहू नासूरसे टपके.
मेरी आंखोंसे खूनी अश्क, यूं गिरते है पलकोंपर;
लोहू सूलीके ऊपर जूं सरे, मन्सूरसे टपके.
अगर कोई सखुन मेरा नेहाले, ताकको पोंहचे.
सुराही शाफ़ जन जये, शराब अंगूरसे टपके.
अगर उस लबके मुश्क आमेजसे, चीनीमें भल जाये;
अबस में घेतरो अंजर कासमें, काफ़ूरसे टपके.
करूं फ़रयाद रोरो यारको, जब याद कर आज़म;

હમ ઈસ્તરાફીલકો લો હુઈ, જાગે સૂરસે રપકે.

ગઝલે આકિલ. ૩૫૬

ઉસ રંગીલેને જો હાથોંકો, લગાઈ મેંહદી ;
કૌનસે બાગકી સચ કહિયો, મંગાઈ મેંહદી.
અશ્કે ગુલગૂંસે હુવાથા તરો, લાલ થોહ દરખ્ત ;
જિસ્કી ડાલીસે સજન તુમને, તુડાઈ મેંહદી.
રશ્કે ઉન્નાબ કિયા, દસ્તે હિનાઈકે તઈં ;
પોર પોર અપનેપે, જિસ વક્ત રચાઈ મેંહદી.
ઉડગયા દેખ્તેહી રંગ, શફકકા નાગાહ ;
જેકદમ જોકે હથેલીકી, દિખાઈ મેંહદી.
હાથમેં સુરખી ન સંમઝે, કોઈ આકિલ ઉસ્કે ;
કિસી આશિકકા લહુ દિલ, મુઠીમેં લાઈ મેંહદી.

ગઝલે ગુલઝાર ૩૫૭

હુવા ક્યું ગુમ તૂ મુઝસે જહાં હય ;
હુવા હે ના કોઈ, હોગા કહાં હય.
તેરે નકશે કદ, પાકે બરાબર ;
જમીંસે દૂરતક આસમાં હય.
રખે સરપર ન ક્યુંકર, કજકુલાહ વોહ ;
દિલેરો દિલબરો, રુસ્તમ જમાં હય.
નિશાના ક્યું ન હો, દિલ જો હદકા ;

निगह अेक तीर है, अब्रू कमां हय.
जिगरसे नज़र आय, तेरे मसीहा ;
[illegible] मुश्किल [illegible], निगाहे [illegible] हय.
शाअ्अत क्या पडे, [illegible] आज ;
परी वश [illegible] तो, जे [illegible] हय.

ग़ज़ले सिराज-३५८

दिलके पुरजे हुये आज, अेक धडक बाकी हय ;
सब तो आखिर हुये किताब, अेक सबक बाकी हय.
दूर न है मुझको शोले [illegible], मगरिबकी नमाज ;
उस शोहाजी लबे मैगूंका, शफक बाकी हय.
तुम कदे पाकी खिलअत, सेहर अेक गुलशनमें ;
फूलपर कतरे शबनमसे, अरक बाकी हय.
नगके उस [illegible] परेशांकी, यही है तासीर ;
गैर कानी है मगर [illegible], हक बाकी हय.
जान देता है तेरे हिजरकी सख्तीसे सिराज ;
आ शिताबी सेती अयजान, रमक बाकी हय.
शरबते [illegible] पिला, [illegible] साकीका आया ;
[illegible] तेरी जान, [illegible] बाकी हय.

ग़ज़ले मजहूल-३५९

तमन्ना सैरे गुलशनकी, अली सैयाद बाकी हय ;

नज़र है फ़क़त इस गुलसे हमको, फ़रियाद आती हय.
सो हम दामनसे तु धोया तो क्या लेकिन क़ियामत तक;
हमारा ख़ूं तेरी गरदनपे, ऐ जल्लाद आती हय.
मैं देखा बाग़में आकर, न गुल है और न गुंचा हय;
चमनमें बुलबुलोंकी हर तरफ़, फ़रियाद आती हय.
मैं देखा लेली मजनुंको, और फ़रहादो शीरींको;
चले अरमान इस तस्वीरका, बेहज़ाद आती हय.
न सो हूं है जिगरमें और, न आंसू आंखमें मेरे;
मगर मुझे मुहब्बत दिलमें ऐ, इस्नाद आती हय.
निक़ाबे अंबरी रुख़से, उठादे अय परी पैकर;
के तेरे दरसमें हमको, मुबारकबाद आती हय.
सखुनके ये लमथे उस्ताद, उनका होगये यारब;
मगर दिस्चक़तमें मक़बूल, अेक उस्ताद आती हय

ग़ज़ले सौदा नं॰ ५०

हम हैं वाबस्ता, मुहब्बतकी यादगारीसे;
सबसे आज़ाद हुये, दिलकी गिरफ़्तारीसे.
शबे ग़फ़लत मेरी है और, फ़िकत ऐसी शताब;
बाज़ आओ रहो सफ़र, रातकी बेदारीसे;
हुआ तलबमें ये खोया, आपको मैंने के निदान;
ताक़िब अपना मैं हुआ, तेरी तलबगारीसे.

मै परस्ती है मेरी बाइसे आमुरज़िशे फ़क्र ;
तौबा सदफ़ा मैंने की है, मगर मैख़्वारी से.
शक यह है ज़ैरे नक़ाब, तेरे किस आशिक़ को ;
मुझपे जो गुज़री सो, मेरी ही पर्दादारी से.
कामे दिल अब तलक हो, तुझसे हमारा हासिल;
काम अपना तो हुआ, बसे है बीमारी से.
पांव ये गर रौंदे ख़ुतां में, तु परे ऐ सौदा
रहियो बाज़रे महब्बत की ख़रीदारी से.

ग़ज़ले रम्ज़ - ३५१

नबे शक्कर ज़बने लब अपने से, सुनाई गाली:
मुझे मीठी लगी ख़ुश होके, मैं खाई गाली.
क्या हलावत थी तेरी गाली में, अल्लाह अल्लाह;
क़ंदे मिसरी से मगर थी, यह बनाई गाली.
छेड़कर तेरे तईं, आपसे हम खाते हैं ;
आशिक़ों को तेरी है, दूध मलाई गाली.
तुर्श हो होके शकर लब ने, मुझे देता हय ;
परस्ते रस्ती हय खटाई में, मिठाई गाली.
ऐ रम्ज़ तेरी ज़बां ये हतो, निपट शीरो शकर;
यह नई तरह की अब तूने, बनाई गाली.

ग़ज़ले रासिख़ · ३५२

निगहांउ सुन यह बनिजे रुख़े, दिल ईरज परी रही;
मेरी चश्म मुंदले मुंदते तउ तेरी, महव बल्वःगरी रही·
पसे मरग बिस्मे निज़र, डाजुहू सुराउ होगया सज
वले;
वही फूं रहा दिले फूं शुदह वही, चश्मड़ी न तरी रही·
तुम्हें गुलड़ी बिस्ने जनाया जूड़हा, मुझसे उस्ने सजा है
तूं;
यहां तुम तो पर दह निशीं रह मुझे, आह दरबदरी रही·
मेरे पास बिन्से हुनर तो थी, वले जूदो जारी थी तेरी यहां;
हुमला से जेशान हासदा बहां, बिन्से बे हुनरी रही·
नहीं होशियालों पे कुछ हसद मुझे रश्क है तो उन्पे हय;
बिन्हें तेरे बल्वेउ सामने मेरी तरह बे ख़बरी रही·
ये बयाज है आज़री आशेडी डुली होरा हो डुली रइतगी;
न यो गिरय औ दिलेशान रहा, न यो बरी मे सहरी रही·
बिगर और दिल सली रफ़्ते थे वले होस क़ानको घेतर ई;
हद उस्के नावडे बुस्मड़ी यह, मेरी ही जे बिगरी रही.
मुझे सोंप डर गपे हिज्रवे, हुवे युं जुदाई ज़िरनवे मिले;
मेरे दिल मे ताहमेया पसी योह, अमानत उस्की धरी रही·
नथी चश्मे रासिख़े जस्ता दिलउ ली जाली जस्कुसे.
दोस्ता
शजो रोब जमे पुर आज उड़ी शधिरा ज़ां सुवांसे लरी रही·

ગઝલેમ ; કુમ. ૩૬૩

જબ હસે ગુલ ચમનમેં, ખિલખિલકે;
ક્યું ન ટુકડે હો, એ બુલબુલ દિલકે.
જહરે ઉલ્ફતમેં ખૂબ હી બચેં;
પર ન પોહચાન હોયેં સાહિલકે.
નાસેહા ક્યું અબસ તુ જકડતા હય;
હમ હેં તાલિબ ફકીરે કામિલકે
કુછ તો મજલિસમેં હે, તિલસ્મ દિખા;
હોશ ઉડતે હેં યહાં બે આકિલકે.
ચાક સીનેસે લગએ દિલકો;
કુબ્ર હો જિન્સે ના મુકાબિલકે.
કરકે બેહોશ લે ગયા દિલ ચોર;
ચૂરને વાલે હોશસે ગાફિલકે.
યાર હમે પસ્ત કરકે મુકરે હય;
એ શાહનશાહકો મેં જાહિલકે.
લેગે કુરબતસે એ બડા પેરા;
ખૂબ ટુકડે કિયે મેરે દિલકે.
કતલ કરનેસે બેહર અય મહબુબ;
ખુલ ગએ જાન લેગે કાતિલકે.

ग़ज़ल ३५४

जौहरसे कब आलूदह है, शमशीरकी सूरत;
पर क़त्लके महज़रपे है, तहरीरकी सूरत.
बेरहम हज़ारोंको, किया क़त्ल जो तूने;
साबित न हुई ऐक भी, तक़सीरकी सूरत.
गुल मैंने चमनमें जो, खिले गुंचेको देखा;
आंखोंके तले फिरगई, तस्वीरकी सूरत.
आता है जो उस जौरसे, [illegible]कारका आलम;
पर कैदमें भी फिरगई, ज़ंजीरकी सूरत.
हासिल तुझे क्या है, मेरे सम खानेसे;
कब मानता है वोह बुते, बेपीरकी सूरत.
दामाने नसीमे सहरी, मुश्क फ़िशां है;
शायद येह खुली ज़ुल्फ़े गिरहगीरकी सूरत.

ग़ज़ले नूर - ३५५

मुपा जलताहूं तेरे, हिजरके मारे आरे;
मेरे जानी मेरे दिलबर, मेरे प्यारे आरे.
अरँह सरपे चला तु, चलेकिन मैं तो;
शौक़में तेरे उठ जाऊंगा, आरे आरे.
मुद्दतें होचुकी फिरते, कुचे अग़्यारोंके.
ऐक दिन रातको मेहमान, हमारे आरे.

चार दरके चाह तेरा, चांदसा, मुखड़ा जो मेहर ;
बैठा गिनताहुं फ़लकपर, हु सतारे सारे ·
नूर जाताजहै सज़असके जुदाईसे तेरी ·
रश्के खुरशीद मेरे माहके पारे सारे ·

ग़ज़ले नूर · ३६६

जबपमें रोने लगे, यारके समझानेसे ;
रोने दिल छिपन सका, अश्कोंके बरसानेसे ·
दिले बेताब शबे तारमें, क्याक्या उलझा ;
याद है याद जुल्फ़के सुलझे, ना के शूशानेसे ·
हाथ गरदनमें न डालो, न मिलो तुमहो वही ;
जेफ़ा हो गयेथे, ग़ैरोंके बहकानेसे ·
बोह तसिलर जवे छलाही, दही मैफ़ानेसे ;
दिलको शीशेमें भलूं, आंखोंको पैमानेसे ·
जो मसीहा तेरे जानेसे, मैं मरजलाहुं ;
जान आजाती है तनमें, तेरे आजानेसे ·

ग़ज़ले नज़र ३६७

ताज उसके देखनेको, न लाये चले गये ;
क्याक्या परी जवान थे, आये चले गये ·
आदम रहा न कोई, पयंबर रहा नहीं ;
बोहली छसी ज़मीनमें, समाये चले गये ·

दारा रहा न जम न, सिकंदरसा बादशाह ;
तख्ते जमीं पे सैंकडो, आये चले गये ·
आलमथा येह ज़ुलैखाका, युसुफकी चाहमें ;
रूठेअे हजार ज्याहके, आये चले गये ·
देखा नज़र मैंने चमनमें जो आपको ;
मेंहदी लगेजा हाथ दिखाके, चले गये ·

गज़ले छब्बीशा · ३६८

लख्तुआईप सबथबझहर, आईल चुलबुला हर हय ;
खुमअडा नूरका मुखडा गज़ब, उसकी सजवर हय ·
ख़बर लीजे येह किसके पांवकी, अठखेल आहर हय ;
के है ठोकरमें जिसके दिलमें उठती थरथराहट हय ·
अब कहताहूं दरयानेकी, उनकी खोलदो चुपकी ;
नहींतो सरहे मेरा आन, ओर साहेबकी चोखट हय ·
अरे ज़ालिम येह क्युं आया नहीं, मालूम है मुझको ;
जलाके जिसकी दिल जलतापडा, सीनेमें चरचर हय ·
जलाके बजमें लेताहूं, तो यूं कहता है वोह ज़ालिम ;
तुझे मैं खूब समझाहूं, अरे तू अेक निरखर हय ·
फिसलजाता है बज्म मखमलका तकया, अपने पेहलूसे ;
तो याद आती है किसकी, वोह मनेकी मुअंकेरपर हय ·
कहा मैंने अब कुछ मुंहसे हाय मरताहूं ;

तो दुया देकते हैं यल ज़्मूठे, मेरे येफ़ सब्ज़ नमायरहय.
जयाहे किस्तर्ह छेनकें, सरापाहेसतेरे दिलको;
के लाखों चश्मकी हरमें मोकाफ़्की लगायरहय.

ग़ज़ले आतशी ३७१

आज जुल्फ़े यारके रुख़्सार तक आने लगे ;
चश्मे खुरशीदमें ली, साँप लेहराने लगे.
आई ताजे हुस्नको, मेहताजे मीना देखकर ;
आनमें खुरशीदमें हम, अश्क रपकाने लगे.
दे दिया सुरमा नरगसको, आरवाने शबने आह ;
हूं जगोंका हमरहा, जंगलमें त्यरडाने लगे.
छेड़ली मज़कत डरे हे, तेग़ खूबे यारको;
जेडे जेहरथे नहां सब, साई दिखलाने लगे.

ग़ज़ले मौलाई ३७२

पग सांकळ
दिल हुवा पाज़ेब जंजर, खुदा खैर करे ;
दाम है जुल्फ़ गिरहगीर, खुदा खैर करे.
किसकी आमद है सबा, आज जो गुल्शनकी तरह ;
कहती है बुलबुले दिलगीर, खुदा खैर करे.
सुरख़ पोशाक पेहन बैठे, होजे तख़्त ऊपर;
किसके है कत्लकी तदबीर, खुदा खैर करे.
शबे बिस्मिल मुझे बिस्तरपे, तड़पते देखा;

हंस्के बोला मेरी तस्वीर, खुदा खैर करे·
कुछ है यां हत्के बया तो यु केहते है रकीब;
कुछ मौलाईकी तौकीर, खुदा खैर करे·

गजले गरीब ३६९

फिक्र दर मैं नेकरूं, यार जुदाई तेरी;
अकल हैरां है मेरी, देख सफाई तेरी·
आईरी करिये मियां तेरे, मुसव्विर के तई;
जिस्ने देख्खूबीसे तस्वीर, बनाई तेरी·
क्या करूं किस्से कहूं, कौन करेगा आसान;
सख्त मुश्केल है मेरे हकमें, जुदाई तेरी·
यह जुदाई जो न थी, बीय न होती पैदा;
क्या खुदा खाली सी रहती, यह खुदाई तेरी·
रोजे महशरको खुदा पूछेगा, सख्तीसे मुझे·
तो मैं भी दस्त दिखाउंगा, दोहाई तेरी·
या मोहम्मद तेरा दर छोड, कहां जाये गरीब;
बादशाहीसे तो बेहतर है, गदाई तेरी·

गजले कैफ ३७०

कर दिये बागको दरबंद, बागबानोंने;
आफेरशा खोल दिये आके, मेहरबानोंने·
ताब आई न मुझे लरके, नजरसे देखूं;

कर दिया माल परीज़ादोंके, इनसानोंने

दिनको है चैन न मुझे, रातको नींद आती हय;

तुझपे गुल्शनमें परी, हमसे जो दीवानोंने.

ताफ़्ना सब देते हैं अब, भूनी सो ग़मख़्वार मेरे;

ईन क्या पाये मियां, शम्अ़से परवानोंने.

ग़ज़ले वहशत. ३७३

निगाहे यार हमसे आज, बे तक़्सीर फिरती हय;

किस्मतकी कुछ नहीं चलती है, अब तक़दीर फिरती हय.

कभी तू भी न पायेगी उसे, गोरे ग़रीबां तक;

के मुद्दतसे हमारी ख़ाक, दामनगीर फिरती हय.

मैं उस लैलीका दीवाना हूं, गाफ़िल जैके सहरामें;

जहानमें अपने मजनूंकी लिये, तस्वीर फिरती हय.

पड़ापे दश्तमें शाहो गदाका, एक रुत्बा हय;

ज़ुलैख़ा हर गली कूचेमें, बे तौक़ीर फिरती हय.

तेरा दीवाना जबसे उठ गया, सेहराये वहशतसे;

बगोलेकी तरह पर ढूंढती नज़र फिरती हय.

ग़ज़ले मूसा. ३७४

चमनमें चोह गुले रअ़्ना तराना, अबके गाता हय;

सरासर बुलबुलोंको एक अ़नी, वज्द आता हय.

योह देउर ताज लुत्फोंमें ..के, बिस्मिल बनाताहय;
दिल-हसरत वहदको नजर योह, बेताबपाताहय.
अजस योह बेयफा क्युं दिल, गिरफ्तोंको सताताहय;
छियत अेक बोसेके क्युं गालियां, लाखों सुनाताहय.
कलक तेरी जुदाइका मुझे, वहशी बनाता हय.
उठाता है बिठाता है, हसाता है रुलाता हय.
सहर तक शामसे फुरकतमें गिनताहुं मैं सैयारे;
जुदाइमें तेरी ख्वाबको भी, ख्वाब आता हय.
कोई अउर मसीहासे कहे, मेरेके अे जालिम;
तेरा बीमार तुझको अब हमें, मुरदन बुलाताहय.
तबस्सीसी शमां जतीहै, जब आंखोंमें मूसाकी;
योह रश्के महरे ताबां जबके पेरीरान दिखाताहय.

गज़ले मूसा-३७५

सरपे पाही धोड रअस कोसन देजये;
बागमें उशाकके गुल रुपे मातम देजये.
गोश्तके हैं साजने, औार साजने हैं सागके;
आह मजाह फिर फालयेह, माहीका सालन देजये.
आरीफीका शौक है सेलाके, मानिन्द अे दिला;
चाहिअे वहशतमें ज, मजनूंका जनजन देजये.
कुज मोयस्सर हो सिया, दूल्हेके अेसा जुस्तां;

झूठो सफ़दका है जहांमें, पर मुझे देखिये·

झूठ दुयोंसे तुला लडे, आलोंसे मिला;

पार मूसा होगया येह उसका जयपन देखिये·

ग़ज़ल ३७६

क़ासिद ला दे ख़बर, यारके आ जानेकी;

जान जाती है चली, हिज्रमें दीवानेकी·

आप आये न कली फ़लज़, इनायत लेने;

सैकडो राह दिखाके, मुझे तरसानेकी·

चश्म गिरयां है सदा, सीना तो बिरयां है मुदाम;

आरज़ू जीमें है बस, जीसे गुज़र जानेकी·

तु मिले ग़ैरोंसे, मैं आंखोंसे अपने देखूं;

हूं हसद है इसे बस जीमे है, मर जानेकी·

ऐ सबा जाके ख़ुदा कुछ, मुझे तदबीर बता;

या उसे लाके मिलाया, मुझे ले जानेकी·

गिरयह जारीपे मेरे, रहम नहीं आनेका;

जब तलक चश्म मेरी, ख़ून है बरसानेकी·

ग़ज़ले म हकुम ३७७

तेरे दरपे हम आके पडे हैं सनम नसकूरके रहे न चलनके

तेरे हिज्रमें जानिये जुस्तो सितम न कुन रके रहे न डूने हु-झे;

तेरी उल्फ़तसे सरहसे मै दिल्बर गिरियस्प की राफ़से लफ़्ते हिगर;

रहे रोते सदा जा दीदए नमनाक शार रहे रहे न ख़लल न के हुए.

ले के पैग़ाम दिल के वो हम हो न सके, ग़म पे फ़िक्र तुम्हारे के जो-
न सके ;

न हुए मैं हूं वो हली हाल हमारे के मन, ख़ग़ार रहे रहे न दहन के हुए.

चला घर से निकल के जैसे रय मन हुआ शादयो सुन के यह अप-
ना सुख़न ;

नहीं इल्स के पर किसी तरह से हम, नशा न रहे रहे न यमन के हु-
ए.

हमे सुब्ह ने आया है जा दहन ने शाया है, आया है अपने सानम

हुए फ़िक्र में रो रो के हम बेदम, नाज़ न रहे रहे न सुख़न के हुए

ग़ज़ल नसीरे देहलवी ३७८

दिल कहीं मेरा गिरफ़्तार हुआ, या हता हय ;

फिर मुझे इश्क़ का आज़ार हुआ, या हता हय.

वो हतो परदेसे निकलता नहीं, आख़िर अय दिल ;

निस्का तूताले जे दीदार हुआ, या हता हय.

देख लेने दो मुझे और भी, यारो उस्को ;

जंद अज रौज़ने दीवार हुआ, या हता हय.

नाले करता है रूँकापरकी, ख़ुदा ख़ैर करे ;

यारो हमपर सितमे यार हुआ, या हता हय.

रोज़ गुल जाता हूं हुरकत से तेरी, सीनेपर ;

सीना अज तफ़्त ग़मे, गुलज़ार हुआ, या हता है.

रात सब यस्सकी फ़रक़ीमें कटी, हाय नसीर ;

दिन ख़ुदा ख़ैर नमूदार हुआ, या हता हय.

ग़ज़ले मख़्दूम. ३७९

नसीब सुतेलो

बख़्ते ख़्वाबीदह बेदार हुवा चाहता हय;
मेहरबां हमपे सितमगार हुवा चाहता हय.
राह उल्फ़तमें दिला कोई नज़र तु हरगिज़;
पेशेपा क़हरे कुहसार हुवा चाहता हय.
तुंद चलती है हवा आज दिला आहोंकी;
कुछ ये अब्रे गोहरबार हुवा चाहता हय.
निशा आलूदह तेरी देखके, आंखें सारी;
मोहतसिब आपही सरशार हुवा चाहता हय.
दिन क़ियामतके क़रीब आये हैं कुछ गौर करो;
चाक ये गुंबदे दव्वार हुवा चाहता हय.
अश्क बिन आह दिला, तू न बहाया कीज्यो;
तुही क्या खून अमलदार हुवा चाहता हय.
है ये हब्बे बेख़ुदी हालत तने लागी मख़्दूम;
फिरके होशसे ज़मगार हुवा चाहता हय.

ग़ज़ले अशरफ़. ३८०

दरदो ग़मे इश्क़ने मारा मुझे;
अब नहीं दम लेनेका यारा मुझे.
जानमें किससे कहूं अय मेहरबां;
ध्यान तो रहता है तुम्हारा मुझे.

डूब गया फ़िर न योह, पाये है यार ;
जहरे मुहब्बतका किनारा मुझे.
चोंक पडा सुन्तेही आवाज़ेपा ;
मैं यही समझाके पुकारा मुझे.
हिज्रकीरात देखिये अब क्या दिखाये ;
दिनतो गया रोतेही सारा मुझे.
उर् नकदूं नामका जुरअतकुं मैं ;
चीरे अगर इश्कका आरा मुझे.

ग़ज़ले अहमद ७८१

ग़म्ज़ने चश्मसे मारा मुझे ;
कर दिया वल्लाह दोपारा मुझे.
ज़ुल्मो सितम उसका सहूं कबतलक ;
अब नहीं ग़म खानेका यारा मुझे.
हिज़्रमें उस यारके मरताकुं मैं ;
कुछ नहीं अब जीनेका यारा मुझे.
अब तलक उस बुते ऐ़ यारने
मीठी ज़बांसे न पुकारा मुझे.
देवे यह दिल किसको, अब अहमद भला ;
दोनो जहांसे हय तु प्यारा मुझे.

ગ઼ઝ઼લે મૂસા. ૩૮૨

ઐસી અજ઼ હૈ હમે મુશ્કેલ, કલૂ ઐસી તો નથી;
જેકલી લુત્ફકો ભી એ દિલ, કલૂ ઐસી તો નથી.
આનકલ યારૂદ જોહોત આપકે, હોતે હૈં જ઼િલાઈ;
જાત પેહલે તેરી જાતિલ, કલૂ ઐસી તો નથી.
ક઼ત્લ આશ્કોંકો કિયા, કરતેહો, અજ જે તક઼સીર;
તેગ઼ે અબરૂ તેરી ક઼ાતિલ, કલૂ ઐસી તો નથી.
યાંરકે કરતેહી ગુલશનમેં, નજ઼ારા અબતો;
આંખ નરગિસકે મુક઼ાબિલ, કલૂ ઐસી તો નથી.
પડ ગયા અ઼ક્સ મેરે ગેરતે, ખુરશીદકા અબ;
રોશની માહકો હાસિલ, કલૂ ઐસી તો નથી.
ખંજરે નાજ઼કે મજરૂહ, યેહ ક્યા કરતે હૈં શોર;
તેરી શમશીરકી ક઼ાતિલ, કલૂ ઐસી તો નથી.
અજતો હરબાતમેં મૂસાસે, ખ઼ફ઼ા હોતે હો;
જો તેરી હર શમાયેલ, કલૂ ઐસી તો નથી.

ગ઼ઝ઼લે મૂસા. ૩૮૩

ખેકલી બાગ઼મે માલી, કલૂ ઐસી તો નથી;
ખાલી હર ફૂલસે ડાલી, કલૂ ઐસી તો નથી.
કુદકો શરમ હૈ, ગુલ્જ઼ારકી આગે તેરે;
મુંહમેં શીરીં તેરે ગાલી, કલૂ ઐસી તો નથી.

ज़में हर नक़्शमें, मेहराजकी सूरत है अ़यां ;
तेरी शमशीरे हिलाली, कलू ऐसी तो नथी·
बात करने नहीं देता है, किसी शाअ़ेरको ;
तब्अ़ उस शूख़की आ़ली, कलू ऐसी तो नथी·
ख़ून किसका किया तूने, सितम छिपाइ जता ;
के तेरे चेहरेपे लाली, कलू ऐसी तो नथी·
सुनते है साक़ियेमय कश्का दिपाला निकला ;
जोतल घेरजनपमें ख़ाली, कलू ऐसी तो नथी·
ख़ून मूसाको दिये क़हजसे, दुन्याने केरज ;
उसको येह चाहने वाली, कलु ऐसी तो नथी·

ग़ज़ले मूसा ३८४

फ़िदाहूमें तुजपर, यही आरज़ू हय ;
जो कुछ आरज़ू है, वोही गुफ़्तगू हय·
सनमसे मुझे बस यही, गुफ़्तगू हय ;
मेरे पास तूहै मुझे, जुस्तजू हय·
न जन्नतकी ख़्वाहिश, न दोज़ख़की परवा ;
फ़क़त हुकम तेरा, मेरी आरज़ू हय·
ज़बांकी न ताक़त, कलमकी न क़ुदरत ;
कहुं क्या लिखुं क्या, जो है तूही तु हय·
नकर ऐब ग़ैरमैसे, मफ़्मूर हूं मैं ;

કે હુકમે ખુદાકી કુછ, ચ શારજૂ હય.
હું મોઅ઼મૂર બઝ્મે મહબ્બતમેં સાકી;
ન ખ્વાહિશ હૈ મેકી, ન શોકે સબૂ હય.
તુ કર શુકર મૂસાકે ફરમાને મૌલા;
અઝ઼ દસ્ત ફુપને ઝપતી, ફરી કુર હય;

ગઝ઼લે ખ઼લીક઼ ૭૮૫

તીર નિગાહે યારને, મારા મુઝે;
અબતો નહીં જીનેકા યારા મુઝે.
ઉમ્રમેં અપની કભૂ, એ મેહરબાં;
ચાહકે એક દિન ન પુકારા મુઝે.
હમસે ખફ઼ા ગૈ઼રસે હો હમ કલામ;
ઝુલ્મ નહીં એસા ગવારા મુઝે.
બહરે અ઼લમમેં તેરે કહાંતક રહૂં;
પાર લગા અબતો ખુદારા મુઝે.
કિસ્સે કહે હાલે દિલ અપના ખ઼લીક઼;
તુઝ સિવા અબ કૌન હૈ પ્યારા મુઝે.

ગઝ઼લે ફિ઼રાક઼ ૭૮૬

ચમને હુસ્ને જાના સે, સદા આતી હય;
નાઝ઼ કરતી હુઈ બે બાદે, સબા આતી હય.
કૌન લરતા હૈ દમે સરદ બે, રાતોંકો મુદામ;

ठंडी ठंडी तेरे कूचेकी, हवा आती हय.
जिसके मैं दस्ते हिनाईकूं नफसी यारव;
वे हर ओक नफससे फिर मुझे हिना आती हय.
दिलेतिव यारकी रखता है, सरे शामसे दिल;
रात क्या आती है ओक, सरपे बला आती हय.
छोड जाता है वे योह, मुझको अकेला घरमें;
दरो दीवारसे रोनेकी, सदा आती हय.
दूरीसे जाल ऊपर, और ऊमरसे जाफा;
नहीं नज्जाओ हुओ मुझे, दोला आती हय.
कमें आता है मसीहासे, मैं पूछूं जोके;
मरने देनेकी तुमको, दवा आती हय.
सुब्ह किस्तरहसे होगी शबे जारीके फिराक;
न तो नींद आती है मुझको, न कजा आती हय.

गजले नासिख ३०७

याके दामन कीओ जाना, तेरे दीवानोंने;
कुदजाने कीओ आबाद, परेशानोंने.
निमबिस्मिल येह तडपते मुझे देख आकातिल;
शोर आलममें किया है, तेरे बेजानोंने.
जल्द उस दखुले सुर्खीसे, शबे तारमें आ;

दिल दिये ज़ुल्फ़े परेशांके परेशानोंने.
क़द्र छैल ब्यांकके पुतलोंका नहो क्युंके भला;
कूठाहै आलमें आलामें भी इनसानोंने.
मेरे दिलदारपे दिलबर शबे मेअ्राजकी रात;
गशी किये हूरों परी कुदसियो गिल्मानोंने.

गज़ले सौदा-३८८

साक़ सीमींकी तेरी देखके गोरी गोरी;
शरमसे शम्अ हुई जलती है थोड़ी थोड़ी.
नय शकरने कही तुझ लबसे किया था दाव्या;
अजतलक उस्की जुदा करते हैं पोरी पोरी.
आ गया रातमें जूं दुज़द हिना तेरे हाथ;
चरनब पांउको लागाहीथा चोरी चोरी.
अब्र बरसे है सियह, मस्त भला ये साक़ी;
दे तुं भरभरके मुझे पीआलियां कोरी कोरी.

गज़ल-३८९

मरते हम गो जे यहां देखा तुझे;
कोई नज़र देखा तो क्या देखा तुझे.
ऐ परी तुमें दिवाना क्युं न हूं;
जान खोसे जारहा देखा तुझे.
गिरयको जुल्जुल्पे उसने हस दिया;

जा. ८

निकले ये गुलगूं क़बा देखा देखा तुझे·
मारे ग़ैरतके न निकले आइताब;
बामपर चढ़ते सनम देखा तुझे·
दीदमें हरचंद है, नुक़साने जान;
फ़ायदा इतना हुवा देखा तुझे·
तुझे गुलशनकी न लाई ता क़फ़स;
बस हुवा है ये सज़ा देखा तुझे·

ग़ज़ले हकीम·३७०

जुदा हमसे वोह सितमगर, हो गया हय;
तो खूं ग़मसे दिल और, जिगर हो गया हय·
मिले है जो रुक रुकके, वोह मुझसे शायद;
मेरी आहका कुछ असर, हो गया हय·
करे है जो बुलबुल्ये, गुलनाल ऐसा;
जिन्होंसे कहीं जुफ़्जर, हो गया हय·
नरहले ज़बर, ओ मसीहाई तेरा;
मरिज़ अब चराग़े, सहर हो गया हय·
कहे कौन तेरा पयाम, आखरीसे;
हकीम उस्से सजके ख़तर हो गया हय·

ग़ज़ले जुरअत·३७१

जड़की ऐसी गया है सौंप, वोह गुलरू मुझे;

कल नहीं पडती किसी करवट, किसी पेहलू मुझे·
ज़ख़्म अेक शमशीरका सा दिल्पे लगलता है आह;
याद आजाती है जब वोह, जुंबिशे अबरू मुझे·
नातवां हूं जस्के फ़ुरक़तसे, तेरे ज्युं बरगे काह;
अब सबा फेरे है उस पेहलूसे, इस पेहलू मुझे·
रोते रोते मैं हूं हैरां, यह मुझे क्या होगया;
बे नज़र आता नहीं, आंखोंमें अेक आंसू मुझे·
जब तलक देखूं न तेरी शक्ल, कल पडती नहीं;
सच बता तूने किया है, यार क्या जादू मुझे·
बातमें मेरीतो अबतक, फ़रक़ कुछ आया नहीं;
क्युं किया चाहता है रुसवा, यार अब हरसू मुझे·
क्या कहूं जुरअत जे उस, सैयाद क़ातिलका गिलह;
दामसे छोडातो छोडा, तोडके बाजू मुझे·

ग़ज़ले दरद· ३७२

अय चश्म मेरे मोतियोंका हार न टूटे;
सब अश्क मुसलसल रहें, और तार न टूटे·
हम पाअे बरहना चले, सेहराके निकलकर;
हर चोब पुकारीके, मेरा ख़ार न टूटे·
सैयादसे बुलबुलने कहा, रोके क़फ़समें;
मैं मूर्छ जलासे प येह, गुलज़ार न टूटे·

इस रात सुराहीने भी, पैमानेमें हिचकी ;
डरने लगी प्यालेसे ति, ख़ुम्मार न टूटे ·
दिल दरदकी बातें न करो, हमसे तो बनी ;
येह रिश्तये नाज़ुक है, मियां तार न टूटे ·

ग़ज़ले ज़ौक़ – ३९३

सर जयड़ते बज़्ह उसख़ातिलके, ज़ेरेपाये हय ;
येह नसीब अल्लाहो अकबर, लोटनेकी जाये हय ·
रेफ़्अत ऐ क़ंदां जुनू ज़ंजीरे, हर खड़काये हय ;
मुझदह ख़ारे दश्त फिर, तलवा मेरा ख़ुजलाये हय ·
हांमदद ताक़त गई है जी, इसे सीनेमें दम ;
देखिये उसतक ख़ुदा पहुंचर, मुझे पोंहचाये हय ·
वाहवा शोरे महब्बत, ख़ूनकी छिड़का नमक ;
उस्तुख़ां मेरा हुमा किस किस मज़ेसे खाये हय ·
न बज़्ममें भी ज़ौक़ तेराही है जस छन्ते बजर ;
जानिजे दरदे दिलजे है बजके होश आजाये हय ·

ग़ज़ले छेनशा – ३९४

क़सम न खाइयो ज़ालिम, मैं पीनेसे ;
वगर न होंगे हम आज़ुरदह, अपने जीनेसे ·
अगर मैं पाऊं अकेला, कहीं तुझे है हय ;
तो किस मज़ेसे लगाऊं, मैं अपने सीनेसे ·

ચમકતે ચાંદકે હૈં ગિર્દ, જિસ્તરહ તારે;
ઝલાજ મલહૈ તેરે મુખડેપર પસીનેસે.
યોહ સુનકે ગ઼ઝલકો ઇનશાકી, ઇસ્તરહ બોલા;
કિસે ગ઼રઝહૈ અબસ, મુંહ લગે કમીનેસે.

ગ઼ઝલે અલી ૭૫

હમ દિલસે ફ઼િદે અહમદ મુખ્તારકે બરદે; (ગુલામ)
લેલેહૈં સિકંદરકે અજ, ઇક઼બાલકો નરદે.
તાઅરીફ઼ લિખી અપે ફક, ઉસ્નૂરે ખુદાકી;
યુસુફ઼સે કઈ ઉસકે હૈં, દરગાહમેં બરદે.
આયાહું તેરે દરપે, મેં મહ્ઝૂન ખુદાકે;
મુશ્કિલ મેરી હલ અકરે, ખુદ આપકી કરદે.
તુશાઇઅે ઉમ્મત હૈ, મેંહું આસી નહાંમે;
ઉમ્મીદ તેરેસેહી હૈ, હરકારે યહર મરદે.
હમ દિલસે હૈં મુશ્તાક઼, તેરે અત્મે રિસાલત;
પરવા નહીં જન્નતકી હૈ, બહદકો ખબરદે. (તપરૂી)
હૈ કૌન સિવા તેરે, શફ઼ાઅતસે નહાંકો;
આલહદકરે અતેઅમાં, રોને હશરદે;
બસ દૈન તેરા આમહૈ, એસાક઼િએ કૌસર;
એક જામ મહબ્બતકા, તેરે આસીકો ભરદે.
ચહતા હૈ મગર અઇસરે, ઇક઼બાલ અલી તૂ;

सर अपना महब्बतसे, उसी झाड़पे धरदे;

ग़ज़ले मुईनुद्दीँन ३८६

राज़ी हैं हम उसीमें, जो कुछ दिल रुबा करे;
चाहे जफ़ा जो गैर करे, या वफ़ा करे।
दिलसा रफ़ीक़ जिसका जुदा, होगया हो यार;
वोह अपनी बेकसीको, न रोयेतो क्या करे।
जिसने हमारे दोस्तको, हमसे जुदा किया;
वोहभी मुराद अपनी, न पाये खुदा करे।
कहता मुईनुद्दीँन है तुम्हें मेरे दोस्तां;
आसां सभोंकी मुश्किलें, मुश्किल कुशा करे।

ग़ज़ल ३८७

दीवाना किया बज़्ममें, शान आके किसीने;
बेहोश किया चेहरेको, दिखलाके किसीने।
देखा जो मैंने दस्त, कलाई निकल आई;
दी गालियां लाखों मुझे, झुंझलाके किसीने।
कुछ दस्त दराज़ी किया क़स्दजो मैंने;
झटकादे मेरे हाथको, शरमाके किसीने।
रख हाथ मेरे सीनेपे, गुलदस्त ए नरगिस;
मारा मुझे दीदारसे, तरसाके किसीने।
समझा मुझे दीवानासा, उस शोख़ने बेज़ार;

दिल छिन लिया मुद्दतमें, जो हलाके किसीने·

ग़ज़ल· ३८८

मैं वोह नहीं हूं के तुज बुतसे, दिल मेरा फिर जाय;
फिरूं मैं तुजसे तो मुजसे, मेरा ख़ुदा फिर जाय·
यक़ीन है के जो पथरका होह, दिल केसा फिर जाय;
मिसाले की जलह नुमा, दिल मेरा यहीं फिर जाय·
छिसाकी वोह न फिरे, जिसके ग़ममें मरता हूं;
जलासे हल्क़पे गो ख़ंजरे, जफ़ा फिर जाय·
फिरे ज़माना फिरे आसमां, हवा फिर जाय;
बुतोंसे हम ना फिरें, हमसे गर ख़ुदा फिर जाय·
जिगेर देये जो आलोंको, अपने मुखडे पर;
तो क्या अजब है के आंधी फुटे, घटा फिर जाय·

ग़ज़ले सलीमी· ३८९

तुम्हारी जुल्फ़को जो यार, जब जलीसे हय;
नरहसी उम्रमे तरबे, सितम जलीसे हय·
फिराक़ यारके क्युंकर, उठायेगा सदमें;
मेरा तो जो फ़क़्रसे, आंखोमें दम जलीसे हय·
मज़ नहीं के पस जब, मरुंग ग़मसे दरगुज़र;
बुतोंके इश्क़की हमदम, क़सम जलीसे हय·
सनमके जमे महफ़िलमें, देखिये क्या हो;

કે શકલ ઉસકીમેં આસારે ગમ, અલીસે હય.

વોહ. શૂફ઼ બનિબે સેહરાસે લી, ગયાહી નહીં;

કે દસ્ત ગૈરસે બાગ઼ ઈરમ, અલીસે હય.

અલી તો બૈરસે લરકે, યહાં કુયાહી નહીં;

કે બાદ રઝીબપે સુલ્હો કરમ, અલીસે હય.

ફ઼િદા હૈ તુઝપે સખીભીતો, બનો દિલસે સનમ;

પર ઉસકે સીનેપે દરધો અલમ, અલીસે હય.

ગ઼ઝલ. ૪૦૦

મુઝકો યાદ વતન દિખાતા હય;

મેરા યુસુફ઼ કુંએં ઝંકાતા હય.

દિબ્યે કિસકી પ્યાસ બુઝતી હય;

ફ઼ંવરે આબદાર લાતા હય.

સાથ પીના શરાબ સૈલીકે;

સાકિ઼યા મુઝકો યાદ આતા હય.

તુરશાર કોઈ મુંહ ફિ઼રાતા હય;

ઝેહરે ક઼ાતિલ મુઝે પિલાતા હય.

શાબકો વોહ પાકીઝ઼ બતાતા હય;

યાદ ગૈરતસે ડૂબજાતા હય.

દિલ મેરા હૈ મિસાલ શીશેકે;

किसलिये खाकमें मिलाता हय·
शम्अ महफ़िलकी मुझको समझा हय;
शायद इसवास्ते जलाता हय·
दीद आशककी चश्म नहीं रखते ;
लनतरानी किसे सुनाता हय·
नहीं मिलते तो खुश रहो प्यारे ;
अंदहली तुमसे हाथ उठाता हय·

गज़ले सोहा ४०१

नीमजां हैं येह तेरे चश्मके, बीमार कई;
परगमे खंजरे मिजगांके, दिल अफ़गार कई·
कोई ससकता हय पडा, और है कोई बेहिस;
जान देने तेरे कूचेके, गिरफ़्तार कई·
इश्क़की शर्त है क्या, मरजुल मौत मुझे;
या रब इनसानके मरनेको, है आज़ार कई·
रौफ़ मुझको न डरा, अपनी बडी पगडीसे·
ऐसे मैं देख चुका, गुंबदे दस्तार कई·
तेरे बाज़ारमें अब क्युंके, न बिगडे सोहा;
एक यूसुफ़ नजर आता है, खरीदार कई·

गज़ले हुसैनी ४०२

शरपिंदह ऊपर है, तेरी तस्वीरके आगे;

सुंबुल है ख़िजल ज़ुल्फ़की, अंबरके आगे ·
आशिक़का तो कुछ बस नहीं, माशूक़के आगे ;
रांझेका तो कुछ बस न चला, हीरके आगे ·
ज़ुलमाके हमें तेग़, निगहसे है किया क़त्ल ;
बनाही न था क़ाफ़िरे, बेपीरके आगे ·
इस दर्दकी दारू नहीं, बिन सब्र हुसैनी ;
तदबीरका कुछ बस नहीं, तक़दीरके आगे ·

ग़ज़ले ज़िहा· ४०३

कहीं मेरी अफ़सहदू, जया न कीजे ;
जिगरमें आग लडकाया न कीजे ·
मैं कुश्ता तेग़ अबरूकाहूं साहिब ;
मुझे तलवार दिखलाया न कीजे ·
यह क़ाफ़िर रहज़नी करती हैं आंखें ;
इशारा उनको फ़रमाया न कीजे ·
जिलायेगा कोई अइसूंका जीडा ;
लिया कीजे चले जाया न कीजे ·
नज़ाते हुस्न जोसाहो ज़िहाको ;
किसी सायलको झडकाया न कीजे ·

ग़ज़ले मूसा· ४०४

दिलसे आशिक़ हम कुम्नेहैं, उस सितमइजादके ;

जिस्पे सौदा दिल्है, लाखों आशिके नाशाद्के ·
दर्पसे हर गिरयह फ़र्याद, डोलहै उस्ताद्के;
क्युं न हम कुरबां हों, अपनी सायते मिलाद्के ·
जामपर नक्शह दिखाकर, करदिया जो होश हाय;
किस्तरह आमाद होते, न लाखो इरशाद्के ·
चश्मे बीना देख उस्को, पायेना बीना हुए;
हमसे यारब जब्त जहतर, डोरे भाहरक्ल्द्के ·
किस्को ख़ाहिश और तमन्ना है कमाले हूरकी;
दिलसे हम हैं कुश्तए अंदाजे, आदमजाद्के ·
सोने दिलसे गरमें जियूं, नालए आतश दिशां;
भाप होजाये अली डोरन, कईस डोलाद्के ·
क्युं न भूसा नक्शह गर हो, नक्शए शीरीं निशात;
येह येह करती है बुलबुल, गुल्शने इजाद्के ·

गज़ले मूसा. ४०५

सेऊ आलम देख तुझको दंग हय;
हुस्न तेरा नक्शए नैरंग हय
खेल है नक्शए, नाले नियाज़;
हुस्नमें और इश्कमें जब जंग हय ·
हे मेरी ज़ामहको शोरे मरहबा;

हमज़बां तहरीरे पुरी आहंग हय.
क्या असर है आह आतशबारका ;
रातका अब दिनने बदला रंग हय.
रखकर उस यारकी तस्वीरको ;
आईनाके सामने बस, नक़्शे अरझंग हय.
गर नहीं है तंग उसका क़ाईयह ;
पर तरद्दुदमें दिल अपना तंग हय.
बख़्त गर आंखोंमें मूसाके मुदाम ;
बख़्त सारा आलमें नैरंग हय.

ग़ज़ले अली. ४०५

बिजलीसे अभी किसकी, सदा आके कदमले ;
कहता था अबजदहोहले, असर असरीपे दमले.
नाम उसका लिखा हुईने, पिला जामसे अपने ;
नोह पायसे अईलाइपे, घेरलका कसमले.
किसशानसे आयेगी, मोहम्मदकी सवारी ;
अरसातसे जन्नामें सखी, हैदरे उमदले.
फ़िदवीको तेरे आलमी, दोज़खसे न डर हय ;
गर किस्पर हस्तीसे गया, राह अदमले.
साबित किया मोअज़्ज़नने, तेरे कूज़का दावया ;
घनकारपे कुईरके, घेरार सनमले.

હમસર ન તેરે હુસ્નકે હૈ, યુસુફે કિન્આં ;
બેચા હૈ જિસે મિસ્રમેં, માલિકને દિરમલે.
આતીહૈ અજબ ઝોંકે, મલક અરશો જમીંસે ;
બસ તોહફ્એ સલ્વાત સદા, સૂએ હરમલે.
એ સાકિયે કૌસર હૈ તેરા, હૈન અજબ જામ ;
મેં અપની મહબ્બતકી, પિલા જામમેં કરમલે.
મહબૂબે ખુદા ઔર ન, મોહમ્મદકે સિવા હય ;
ઇસ્બાતકી અબ મુજસે, ખુદાએકી કસમલે.
કરતેહૈં મલક ફેરા સદા, અપને પરોબાલ ;
જિસ રાહમેં ચલતીહૈ, તેરી ફૌજ અલમલે.
મહદૂ મન રેહ ગએ, દરફૈને નબીસે ;
ક્યા ફિકરમેં બૈઠાહૈ આસી, ગોશએ ગમલે.

ગ઼જલે મૂસા. ૪૦૭

ગુલગએ ગુલશનસે બાકિન પ્યાર બાકી રેહગએ ;
ગુમ ફકૂને હોગએ પરમાર બાકી રેહગએ.
દૌરે આખિર હૈ દિલા, હુશ્યાર રેહના ચાહિયે ;
ચાહ દિલસે હડ હુઇ, ગોયાર બાકી રેહગએ.
દૌડતેહૈં ઇન્દીનો ડાગ઼બકે ઘોડે ચારસૂ ;
માલ શાહોંકો હુએ અબજાર, બાકી રેહગએ.

तीरे नज़रसे दिल अुश्शाक़के नासूर हुये ;
ज़ख्म अछे होगये सूफ़ार बाक़ी रेहगये·
दरदो सौदा जेके उनका मीरो मिरज़ा ओर नज़र ;
चलगये मूसायले अश्आर बाक़ी रेहगये·

गनसोपूरी·

मुखम्मसे हुसैन·१

सोता है गले लगके वोह, जब यार पलंगपर ,
क्या नाज़ ओ अदासे·
आती है नज़र फूलोंकी मेहकार पलंगपर ;
उस जिस्मके बूसे·
है सुर्ख़ जो पोशाक तो, उस गोरे बदनपर ;
सजती है सरापर·
रखता है अजब तरहका, गुलज़ार पलंगपर ;
संदलकी बिनासे·
साक़ी तेरे सदके तु बराजमको लादे ;
जो शौक़ सुराहो·
जो साथ रहूं यारके सरशार पलंगपर ;
सरमस्त निशासे·

है आरजू दिलकी योह्‌भी, आग़ोशमें आवे ;
आहिस्तासे मेरी येह.
सोजा तो होलउ मैं, अलहार पलंगपर ;
मिन्नतयेह्‌ खुदासे.
रंगीनी तेरे शेअरकी, सुनसुनके हुसैनी;
अब मुश्ताक हुवा दिल;
तु खुश रहे और पास रहो, दिलदार पलंगपर ;
हर रोज रजासे.

मुस्तजाद अकबर. २

इस इश्क़ने यारो मुझे, दुन्यासे उठाया ;
दीवाना बनाके.
अल्फ़ोंमें परीरूके गिरफ़्तार फिराया ;
फिरताना बनाके.
फिर शौक़के शीशेमें शराब इश्क़ अपनी,
भरभरके पिलाया.
फिर मेरा तमाशा सारे आलमको दिखाया,
मस्ताना बनाके.
येह दुख्तरे रज़ लगाती है, हरएकके मुंहसे ;
बहेसोरस भी साक़ी.

ક્યા નામ ખુદા તેરા યેહ, ક્યા તૂને પિલાયા

મૈખાના બનાકે.

બે દિલ કિયા દિલબરને, બજસલેકે મેરા દિલ;

કિસમ કરો હુનરસે.

ફિર અપને લગા કાનકે, બાલેમેં ઝુકાયા;

દુરદાના બનાકે.

નજદીક રકીબોંકે સનમ રાતકો બેઠા;

મજલિસ કિયા રોશન.

ફિર અપને શમ્અકે ઉપર હમકો જલાયા;

પરવાના બનાકે.

ગેરોંકો બુલાકર યેહ, લગા પાસ બિઠાને,

મુદ્દતકે ગોયા દોસ્ત.

હમ દોસ્તે યેગાનાકે, તઈ દૂર બિઠાયા,

બેગાના બનાકે.

અકબરકી યહી અરઝ હૈ અબ હકસે રાગોરોઝ

અપના તૂ તાલેબ.

દુન્યામેં અગર રખના હોતો રખસે ખુદાયા,

મરદાના બનાકે.

मुस्तज़ादे मौअँज़न ३

मैंने अज़लक तो तेरा इश्क़ निबाहा आहा,
जाके सो तरह का ग़म.
पले अफ़सोस तूने मुझे न चाहा आहा
जानिये जुल्मो सितम.
फ़ुह जफ़ुहशाको येकायेक मैं कहूं क्या तुमसे,
तेरे बिन गुज़रा जो कुछ.
दिले पुर दर्द ये ह पेहलूमें कराहा आहा,
चाहकर तुझको सनम.
कायरिस जायके तुम रैन रहेहो पीतम,
आय कीरपा करोजी.
जतोहै जन मेरी मिन्तीकर आहा आहा,
पाप होजावे धरम.
सानूं घायल कित्ती तक़सीर करीथी रैंडी,
मेंडी तो जन सेंडी.
छिदरी जहां तेरी तिरछी निगाह आहा,
कुछ नहीं तीरसे कम
ऐसी कायथूक आली सांगजरा मन पासन,
प्यू तुला जन्नायी आन.
जनो धन दोगा दिल्से ज़ार आहा आहा,

चालःपर छेलडा जुलम·

अरदी अरदी अेर फुदी अेर तुंधे,

पीये दिधे हाजिल दिधे·

वीयह माअशूक पाशा यिस्तह अघाहा आहा,

कुछ नहीं जेशो नडम·

ज्युरी ज्युरी येरी हॅन्ड समनिरल येर हियर,

डिसगिय माधे डियर·

ऑन्डगो अेनी येर युइारा आहाहा अहा

माठे होस अेपरीडे डम·

वकुते मस्ती योउरीहेम तुरा दरजरे पेशा,

हमयो उम्मीदे विसाल·

दीदह अमअनतो सनमयंद अहाहा आहा·

कुस्तअे नाने तोअम·

सरइ तुल उम्र डिलें हिजर लेडाया सनमी,

सुम्मा जिल्लाहे इमन·

इ आहा सुम्मा आहा सुम्पा आहाहा आहा,

लै साकी पिसले सनम-

हेइ सहहेइ हे अइसोस सद अइसोस सनंम,

आया पयगामे अजल·

छुर गया नफ्मे ज्गरसे मेरे हाहा आहा,

अब निकल जयेगा दम·

है पोअजब तेरे अबरोअे मुसलसल मोअं,

रोक नहीं ईस्मे जरा·

येह गजल जिस्ने सुनी उस्ने सराहा आहा,

ताजह तरताजार कुम·

रेख्तो छेलशानो १

चुलती है येह तो निगोडी मुझे लारी अंगया;

कोई सादीसी मेरे वास्ते लारी अंगया·

गोखडे लहर जुनत डांक सलारे कया चीज़;

उससे हो जती है कमजफ्त गंवारी अंगया·

बीबी मुगलानी ने सीसाछेथी आछे न पसंद;

बेगमाळने चोह सर उनके से मारी अंगया·

ढींगा मस्ती अब अब किससे कुछे येह तो केहो;

इरगछे आपडी सारीकी सारी अंगया·

थी अजब कोई सुघड जिस्ने येह काडी जुरी;

पाछडी जनाछे अेक फूलोंकी कियारी अंगया·

हाथ छेलशाका कही घू जे गया तो बोली;

तेरा मकदूरके तू छेडे हमारी अंगया·

रेख्ता रंगीन नो. २

मैं बोहत तो ओढ़ने की नहीं कुबड़ी ओढ़नी ;
माबू मुझे मंगादे ऐसा अबड़ी ओढ़नी ·
बरसात जिसको कहते हैं वो उस बहार में ;
सरपर छपाके होती है बादलकी ओढ़नी ·
गरमी के मारे ताकमें आये है मेरी जान ;
तेह करके पियारी में अंचलकी ओढ़नी ·
आये लचक कमरमें मेरे लोगो दोड़यो ;
घुरने लगके तो सरसे मेरे ढलकी ओढ़नी ·
लाखी निपर मंगादे के रंगी लगाऊं मैं
नै ठैरती है सरपे मेरे हलकी ओढ़नी ·

बेत यक़ानी. १

देख पछतायगा ओ बुत मेरे तरसाने से ;
उठके कफ़न से होयगा बफिगा बुत आनेसे ·

मजमउल अशआर नो
तीजे याल मपूरो ·

આમનજમ ઉલ અશીઆરના ત્રીજ વાલમની કિતાબ
ઘણી સારી રીતે સુધારીને લખીછે તોંપણ કોઇ ઠેકાણે
કોઇ ચૂક રહેલી નજર આવે તો તે શાણાં વાંચનારા
ઓ સુધારી વાંચીને માફ કરશે એવી આશાછે.
સા. મેહતાજી ચુનીલાલ મંછારામની દુવા સલામ
વાંચજોજી. આજની મીતી સંવત ૧૯૩૯ના ફાગણ
સુદ ૨ ને વાર સોમે તારીખ ૨૦મી ફેબ્રુવારી સન ૧૮૮૨ઈ

આમનજમ ઉલ અશીઆરનાં વાલમ-૧-૨-૩ તથા
ઘણી જાતના મુસલમાની કિસ્સા ગુજરાતી હરફમાં
સુધારીને લખાએલા શ્રી મુંબઈ મધ્યે બાહારકોટ ભીંડી
બજારમધ્યે નવાબની મસીદ સામે મુન્સી નૂરૂદીન
બિન જીવાખાનની દુકાને તથા શેઠ યુસુફ અલી બિન
કરીમજીની દુકાને વેચાથી મળશે. તથા પાયધોણી
નાકે બંગાખાનાની સામે શ્રી પોરબંદરના કાજી
ફતેમાહમ્મદ બિન કાજી નૂરમાહમ્મદ સાહેબની દુ
કાને વેચાથી મળશે.
